वर्ष:1 अंक:1

मुहब्बत | इबादत | रूहानियत

जुलाई–सितम्बर 2014

रिसाला सूफ़ियाना

CHHHIN16171/33/1/2014-TC

रिसाला तज़किरा-तुस्-सूफ़ीया फ़ी तालीमात-उर्-रूमीया

तिमाही पत्रिका

मुरीदी क्या है?

मसनवी
मौलाना रूमी

तसव्वुफ़

ख़्वाजा ए चिश्ती

नमाज़े ईश्क़

दुआ

ज़िक्र

राबिया बसरी

महफ़िले सिमा

लिबास

फ़क़ीरी
मुल्ला नसरूद्दीन

+91 8878 335522
www.sufiyana@gmail.com

रिसाला 1
www.sufiyana.com

www.sufiyana.com

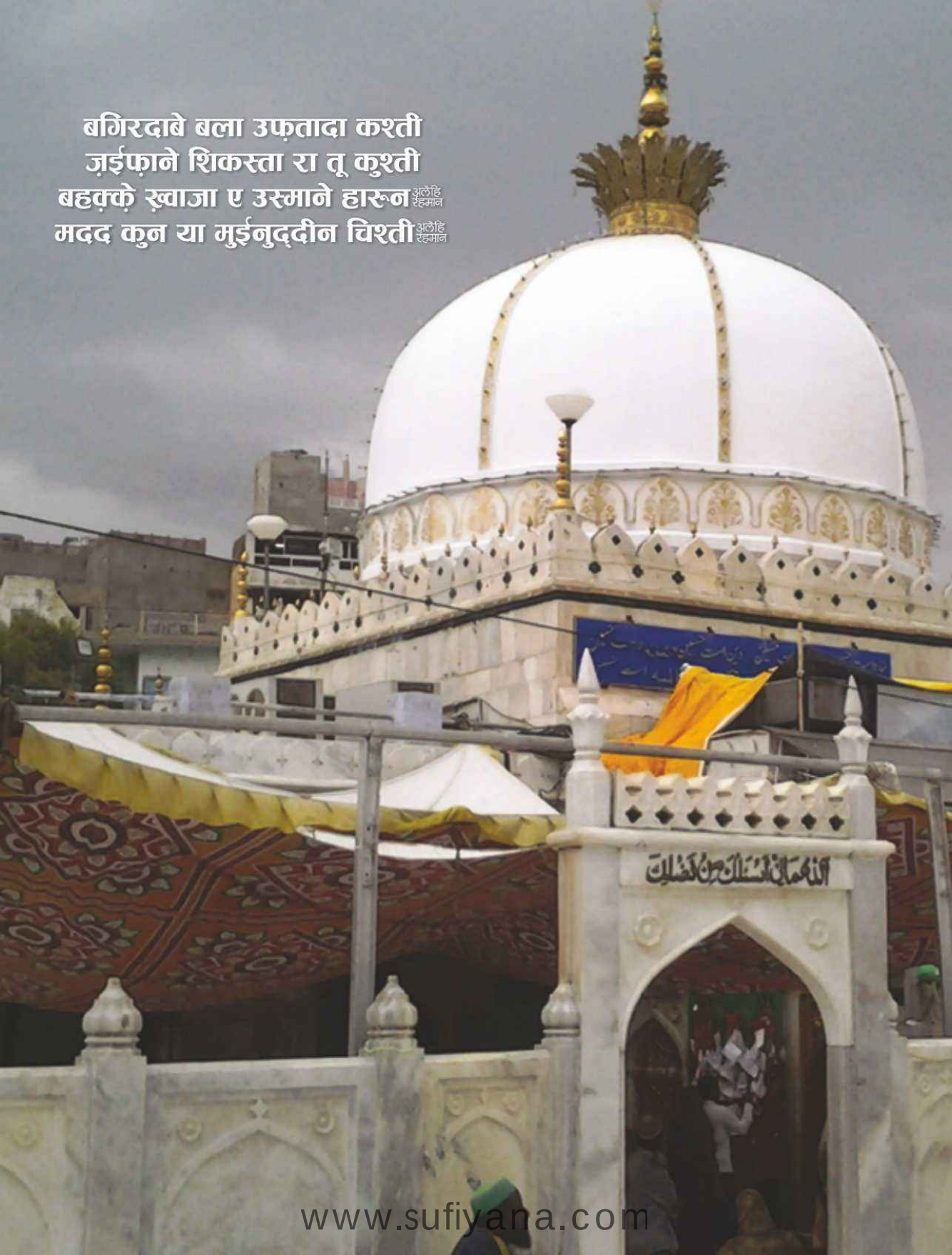

www.sufiyana.com

एडीटर

हमारी तहज़ीब एक पेड़ की तरह है। ये जितना हरा भरा रहेगा, हम उतने ही ख़ुशहाल रहेंगे और तरक़्क़ी करेंगे। लेकिन आज, ये मग़रिबी बिमारी में मुबतेला है। जिसकी वजह से ये बहुत कमज़ोर हो चला है, दिन ब दिन सूखता जा रहा है और अंदर से खोखला भी होता जा रहा है।

हम में से बड़े ओहदेवालों, बुज़ूर्गों और आलिमों की ख़ासतौर पर ज़िम्मेदारी है कि इसकी हिफ़ाज़त करें। लेकिन बहुत से ज़िम्मेदार इससे बचते हैं, बल्कि कुछ तो इसकी हक़ीक़त से भी बेख़बर हैं। वो इसकी मज़बूती के लिए काम चलाऊ तरीका बताते हैं, मानो कमज़ोर पेड़ में लकड़ियों बल्लियों का टेक लगाने कह रहे हों और बहाना ये है कि कम से कम ये खड़ा तो रहे। जबकि सहीं मायने में इसकी मज़बूती के लिए, इसकी जड़ों पर ध्यान देना होता है, उसकी असल पर काम करना होता है।

अब अगर इस पेड़ को फिर से मज़बूत होना है तो इसे रूहानियत का पानी चाहिए, तरीक़त की खाद चाहिए और बड़े-बड़े किसानों यानी सूफ़ी बुज़ूर्गों की हिकमत चाहिए। तभी और सिर्फ तभी ये पेड़ बच सकता है, फिर से हरा भरा हो सकता है। फिर से इसमें अच्छाई की पत्तियां उगेंगी, फिर से मुहब्बत के फल लगेंगे और फिर से अमन के फूल खिलेंगे। इसके साथ ही साथ, ज़ात-पात की बेकार टहनियां टूट जाएगी, नफ़रत की सूखी पत्तियां झड़ जाएगी और सारे इन्सान ख़ुशहाली व तरक़्क़ी के उस मुक़ाम पर पहुंच जाएंगे जहां हक़ीक़त में उन्हें पहुंचना है। अब सवाल ये उठता है कि इसे शुरू कैसे किया जाए, तो इसका जवाब ख़ुदा के इस कलाम में मिलता है।

''और जो राहे हक़ में कोशिश करते हैं,
(तो) ख़ुदा उन्हें सही रास्ता दिखा देता है और
बेशक ख़ुदा नेक व साहिबे एहसान (सूफ़ीयों) के साथ है।''

(क़ुरान 29:69)

ये रिसाला (पत्रिका), उसी राहे हक़ में एक कोशिश है।

रब हमें उन सूफ़ीयों के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और अपने खास क़ुर्बत व इनामात से नवाज़े।

आमीन!

(सैफ़ुद्दीन अयाज़)

Editor

शुक्रअल्लाह वलहम्दोलिल्लाह

बिस्मिल्लाहे वस्सलामो अला मुहम्मद

हू अल मुर्शिद

बयादगार

इमामुल मुहब्बत ताजुल औलिया

हज़रत सूफ़ी जलालुद्दीन खिज़्र रूमी शाह अलैहि रहमान

हसनी क़ादरी चिश्ती अबुलउलाई जहांगिरी

रिसाला 1

रिसाला सूफियाना

तज़किर-तुस-सूफ़िया फ़ी तालिमात-उर-रूमीया

सूफ़ीयाना

तिमाही पत्रिका

वर्षः1 | अंकः1 | जुलाई–सितम्बर 2014

ज़ेरे सरपरस्ती

सूफ़ी सफ़ीउद्दीन सादी

सदर

सूफ़ी कमालुद्दीन जामी

ज़ेरे निगरानी

मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर अशरफ़ी

सूफ़ी इकरामुद्दीन आरिफ़

सूफ़ी इनामुद्दीन सूफ़ी

सूफ़ी इक़बाल अहमद

एडवाइजिंग टीम	हाफ़िज़ ज़करिया, सूफ़ी जिलानी खान, अज़ीमुद्दीन शरीफ़
पब्लिशर व एडिटर	सैफुद्दीन अयाज़
डायरेक्टर	रज़िउद्दीन जुनैद
सेल्स एण्ड सर्कुलेशन	नवाबुद्दीन एजाज़, नईमुद्दीन अशफ़ाक़
प्रूफ रिडिंग	अज़हर 'राज'
प्रिंटर	रूमवी आफसेट, तारबहार चौक, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

खतो किताबत का पुरा पता

'**सूफ़ीयाना**' पत्रिका, दरगाह के पास, केलाबाड़ी, दुर्ग (छत्तीसगढ़) 491001

Mobile: +91 **8878 335522** Email: **www.sufiyana@gmail.com** web: **www.sufiyana.com**

- भेजे गए लेख, बिना किसी इजाजत के तब्दील किये जा सकते हैं और पसंद न आने पर वापसी की जिम्मेदारी नहीं है।
- बिना इजाजत इस मैगजीन का किसी भी तरह से छापना या डिजिटलाइजेशन पूरी तरह से प्रतिबंधित है।
- अपने सुझाव या फीडबैक देने के लिए Email या SMS करें।
- पत्रिका हासिल करने के लिए Email या SMS करें।

मुद्रक एवं प्रकाशक सैफुद्दीन अयाज़ द्वारा 'सूफ़ीयाना' रिसाला, दरगाह के पास, केलाबाड़ी, दुर्ग (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं रूमवी आफसेट, तारबहार चौक, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) से मुद्रित।

हम्दो सना

हम्दो सना है तेरी, कौनो मकान वाले।
ऐ रब्बे हर दो आलम, दोनो जहान वाले।
बिन मांगे देने वाले, अर्शो कुरान वाले।
गिरते हैं तेरे दर पर, सब आन बान वाले।
बेशक़ रहीम है तू, रहमत निशान वाले।

यौमुल जज़ा के मालिक, ख़ालिक़ हमारा तू है।
करते हैं तुझको सजदे, तेरी ही जुस्तजू है।
इमदाद तुझसे चाहें, सबका सहारा तू है।
दीदार हो मयस्सर, ये दिल की आरज़ू है।
रस्ता दिखा दे सीधा, ऐ आसमान वाले।

रस्ता दिखा दे हमको, परवर दिगारे आलम!
जिस पर चला किए हैं, परहेज़गारे आलम!
नियामत है जिनको मिलती, तुझसे निगारे आलम!
है यादगार जिनकी, अब यादगारे आलम,
तेरी नज़र में ठहरे जो इज़्ज़ोशान वाले।

मातूब जो है तेरी, ऐ ख़ालिक़े यगाना!
गुमराह हुए जो तुझसे, ऐ साहिबे ज़माना!
आजिज़ हबीब को तू, न उनकी राह चलाना।
मकबूल ये दुआ हो, मुर्शिद निशान वाले।

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

Contents

विषय सूची

	उनवान	पेशकर्दा
	हम्द शरीफ़ 5	
1.हज़रत मुहम्मद सल्ल.	फ़क़ीरी 8	मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर अशरफ़ी
2.कुरान	अंधेरे से उजाले की ओर... 10	सैफ़ुद्दीन अयाज़
3.एक सूफ़ी का ख़त	नमाज़ ए ईश्क़ 12	सूफ़ी कमालुद्दीन जामी
	मी रक्सम 15	
4.तालिमाते ख़िज्र रूमी रअ	ज़िक्र–1 17	सूफ़ी सफ़ीउद्दीन सादी
5.मसनवी मौलाना रूमी रअ	तलब.......................................18	सूफ़ी सफ़ीउद्दीन सादी
6.तसव्वूफ़	तसवफ़.....................................20	सूफ़ी इक़बाल अहमद
7.जामी रअ व सादी रअ	जामी अलैहि रहमान व सादी अलैहि रहमान 22	रज़िउद्दीन जुनैद
8.रूहानियत	दुआ 24	सूफ़ी इकरामुद्दीन आरीफ़
9.ख्वाजा चिश्ती रअ	चार तरकी ताज.........................26	सूफ़ी कमालुद्दीन जामी
10.हयाते सूफ़ी	हज़रत राबिया बसरी अलैहि रहमान 28	सूफ़ी इनामुद्दीन सूफ़ी
11.आदाब-ए-मुरीदी	मुरीद कौन? 31	सूफ़ी जिलानी खान
	नात शरीफ़...............................33	
12.सिमा व रक़्स	महफ़िल ए सिमा.......................34	सूफ़ी इक़बाल अहमद
13.रब के खास बंदे	रिजालुल्लाह.............................36	अज़ीमुद्दीन शरीफ़
14.कशफ़ुल मेहजूब	ह.अबुबक्र अलैहि रहमान और तसव्वुफ़ 38	हाफ़िज़ ज़करिया
15.शरीअत	पाकी..39	मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर अशरफ़ी
16.सूफ़ीज्म और हम	लिबास.....................................40	सैफ़ुद्दीन अयाज़
	डिसिप्लिन................................41	सैफ़ुद्दीन अयाज़
	लकड़हारा और कौंवा.................42	अज़हर 'राज'
17.जीवन दर्शन	जीवन दर्शन.............................43	सालेहा कुरैशी
	मुल्ला नसरूद्दीन–1.................44	अज़हर 'राज'
	क्वीज़......................................46	
	कैलेण्डर 47	

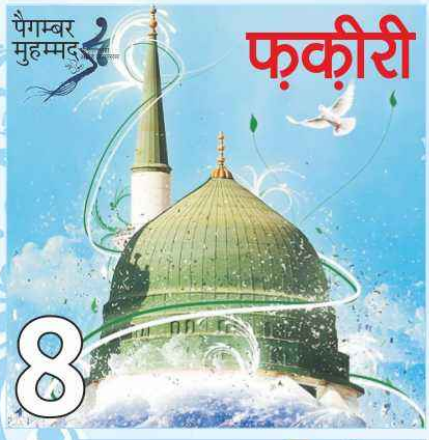
पैगम्बर मुहम्मद
फ़क़ीरी
8

10
ख़ुदा का फ़रमान...
अंधेरे से उजाले की ओर

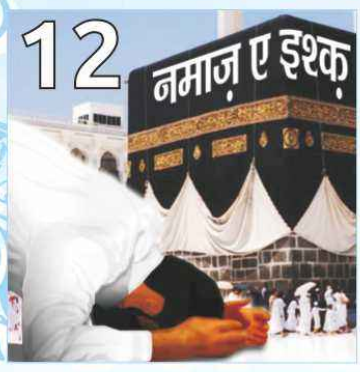
12
नमाज़ ए इश्क़

15
सूफ़ीयाना कलाम
मी रक़्सम

मसनवी मौलाना रूमी
18
तलब

तालिमाते ख़िज़्र रूमी अलैहि रिज़वान
17
ज़िक्र

रूहानियत
दुआ
24

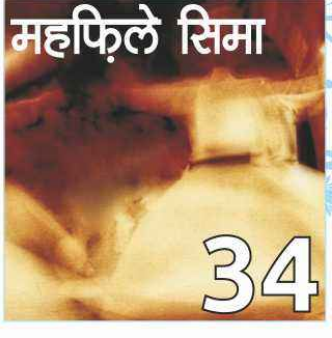
महफ़िले सिमा
34

Features

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

अगर आप लगन की अद्भूत शक्ति का अध्ययन करना चाहते हैं
तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की जीवनी पढ़ें
(नेपोलियन हील, थींक ग्रो एण्ड रिच)

अगर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम न होते तो धर्म, मठों और जंगलों में सिमटकर रह जाता।
(स्वामी विवेकानंद)

हम में से जो भी नैतिक व सदाचारी जीवन व्यतीत करते हैं,
वे सभी दरअस्ल इस्लाम में ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं।
क्योंकि यह गुण वो सर्वोच्च ज्ञान एवं आकाशिय प्रज्ञा है
जो हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हमें दी।
(कारलायल)

www.sufiyana.com

फ़क़ीरी

आमतौर पर फ़क़ीर उसे समझा जाता है जो हाथ में क़ासा लिए लोगों से मांगता फिरे। लेकिन यहां उस फ़क़ीरी की बात नहीं हो रही है। यहां फ़क़ीरी का मतलब खुदापरस्ती के लिए दुनियावी चीज़ों या ज़िंदगी की ज़रूरियात का कम से कम इस्तेमाल करना है। जितना इन चीज़ों की चाहत बढ़ेगी, उतना ही खुदा से दूरी बढ़ती जाएगी। हत्ता कि इन्सान इन ख्वाहिशात के दलदल में फंसता चला जाएगा। इसी से बचने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़क़ीरी इख़्तियार करने को कहा। आप फ़रमाते हैं–

अलफ़ख़रो फ़क़री

यानि फ़क़ीरी मेरा फ़ख़्र है।

खुदा के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती। उनकी बहुत सी खासियत में से एक खासियत उनकी फ़क़ीरी है। उनको बादशाही से ज़्यादा फ़क़ीरी पसंद रही, तवंगरी से ज्यादा मुफ़्लिसी पसंद रही, यहां तक कि हज़रत आईशा अलैहि रहमान फरमाती हैं कि "**आप ने जिंदगीभर कभी पेट भरकर खाना नहीं खाया** और इसका कभी शिकवा भी नहीं किया।"

ज़माने का दाता मगर घर में फ़ाक़ा।
खुदाई का मालिक मगर पेट खाली।

ये फ़क्र व फ़ाक़ा (भूखा रहना) इख़्तियारी था यानि खुद की मर्ज़ी से किया हुआ, क्योंकि जिसके हाथों कायनात की सारी नेअमतें हों, उस पर कोई तकलीफ कैसे हो सकती, जब तक वो खुद न चाहे।

यहां मक़सद दुनिया की ख्वाहिश नहीं है। यहां तो रब के दिए हुए काम की फिक्र है, अल्लाह के बंदों की फिक्र है, इसलिए जितना जीने के लिए जरूरी है बस उतना ही, उससे ज्यादा नहीं। और **इतना तो बिल्कुल नहीं कि खुदा की याद से दूर करे।**

> अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फरमाया कि अगर तुम चाहो तो मक्के की पथरीली ज़मीन (पहाड़ों) को सोना बना दूं। तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि "**नहीं मैं ये नहीं चाहता, बल्कि मैं तो ये चाहता हूं कि एक दिन खुशहाल रहूं और एक दिन भूखा रहूं। जब भूखा रहूं तो तेरी बारगाह में गिड़गिड़ाऊं और तुझसे मांगूं। और जब खुशहाल रहूं तो तेरा ज़िक्र करता रहूं और तेरा शुक्र अदा करता रहूं।**"

हज़रत जिब्राईल अलैहि रहमान फरमाते हैं कि अल्लाह ने हुक्म दिया है, कि आप जो चाहें आपकी खिदमत में पेश कर दूं। ये आपके अख्तियार में है कि आप 'बादशाह नबी' बने या 'बंदे नबी'। तो आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने तीन मरतबा फरमाया कि "**मैं बंदा नबी बनना चाहता हूं।**" (तबरानी, ज़रक़ानी 322/4)

आप गरीब व मिस्किनों से इस तरह पेश आते थे कि वे लोग अपनी गरीबी को रहमत समझते थे और अमीर को जलन होती थी हम गरीब क्यों न हुए।

आप खाना तीन उंगलियों से खाते, ताकि निवाला छोटा हो और फरमाते है कि खाना इस तरह खाओ कि पेट का एक तिहाई हिस्सा ही भरे, फिर एक तिहाई हिस्सा पानी पियो और बाक़ी एक तिहाई हिस्सा खाली रखो। इससे पेट की कोई भी बीमारी नहीं होगी।

आपकी तरह फाका रहना हर किसी के बस की बात नहीं। रमज़ान में आप बिना इफ्तार किए कई दिनों तक रोज़ा पर रोज़ा रखते। ये देखकर सहाबियों अलैहि रहमान ने भी इसी तरह रोज़ा रखना शुरू कर दिया। कुछ दिनों में ही कमज़ोरी ज़ाहिर होने लगी। जब आपने पूछा तो सहाबियों ने बताया कि आपकी तरह मुसलसल बिना इफ्तार के रोज़ा रख रहे हैं। तब आपने फरमाया "**तुम में, मेरे मिस्ल (मुझ जैसा) कौन है? मुझे रूहानी तौर पर खुदा की तरफ से खिलाया जाता है, पिलाया जाता है।**" (बुखारी व मुस्लिम 384/1)

...Next दरूद सलाम क्यों?...

वो मुसलमान नहीं हो सकता जो खुद तो पेटभर खाए और उसका पड़ोसी भूखा रहे। (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)

www.sufiyana.com

अंधेरे से उजाले की ओर

www.sufiyana.com

''रब के हुक्म से वो अंधेरे से निकालकर रौशनी की तरफ ले जाते हैं''
(कुरान 5:16)

''और उसके हुक्म से (वो) रब की तरफ बुलाते हैं,
और (वो) सूरज से चमकनेवाले हैं''
(कुरान 33:46)

''वो सूर्य की तरह रौशन हैं और अंधेरे को परास्त करने वाले हैं''
(वेद य.31:18)

अल्हम्दोलिल्लाह, सारी तारीफें उस खुदा के लिए ही है, जिसने सारे आलम को बनाया। उसी ने हमें पैदा किया और जिंदगी दी। इसलिए नहीं कि हम जिहालत के अंधेरे में रहें बल्कि इसलिए कि हम इल्म की रौशनी में रहें और अपनी जिंदगी व आखिरत भी रौशन करें। जब हमें ये मालूम ही नहीं होगा कि हमारे लिए क्या सही है और क्या गलत, तो हम जिंदगी को खुशगवार और बेहतर कैसे बना सकते हैं। अपने पैदा होने के असल मक़सद तक कैसे पहुंच सकते हैं। जिसको सहीं ग़लत का इल्म नहीं होता, जो जिंदगी उन्हें दी जाती है वही जिये जाते हैं। लेकिन इन्सान ऐसा नहीं होता, क्योंकि उसमें सोचने समझने की सलाहियत होती है। वो खुद सोच सकता है कि उसके लिए क्या बेहतर है क्या सही है। सिर्फ इसी वजह से वो जिन्दा लोगों में सबसे बेहतर है, अशरफुल मख्लूकात है।

लेकिन इन्सान एक मुकाम पर खुद की अक्ल व इल्म पर ज्यादा भरोसा करने लगता है और अपनी सोच का एक छोटा सा दायरा बना लेता है। उसे हर चीज अपने इसी दायरे के हिसाब से चाहिए होता है। इस तरह का दायरा दरअस्ल कम अक्ल की निशानी है। हज़रत दाता गंजबख्श अली हजवेरी अलैहि रहमान फरमाते हैं– "अक्ल और इल्म, किसी चीज को जानने का जरिया है, लेकिन खुदा को जानने के लिए और उसकी मारेफत हासिल करने के लिए, ये काफी नहीं है। इसी लिए तो **हर आलिम सूफ़ी नहीं होता, जबकि हर सूफ़ी एक आलिम भी होता है।**"

इन्सान को चाहिए कि अपने दायरे से बाहर निकले और उस लामहदूद ज़ात को, असिमित ज्ञान को हासिल करने के लिए खुद को आज़ाद कर ले। और इस अंधेरे से निकलने की कोशिश तब तक करते रहें, जब तक कि कामयाब न हो जाए। कुरान में है–

''ऐ खुदा, हम तुझी को माने और तुझी से मदद चाहें।
हमको सीधा रास्ता चला, रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान (ईनाम) किया,
न कि उनका जिन पर गजब हुआ और न बहके हुओं का।'' (कुरान 1:6–8)

इसके लिए खुदा से ही दुआ मांगें और ऐसे रहबर से जुड़ जाएं जो खुद इस अंधेरे से निकल चुका है। ये दो तरह के होते हैं **एक** वो जो खुद को इस अंधेरे से निकाल ले यानि आलिम। **दूसरा** वो जो खुद तो अंधेरे से निकले ही, साथ में दूसरो को भी निकाल ले यानि सूफ़ी। आलिम तो बहुत होते हैं लेकिन आलिम बनाने वाले बहुत कम होते हैं। **अंधेरे से निकल जाने वाले तो बहुत होते हैं लेकिन उस अंधेरे से निकालने वाले बहुत कम होते हैं।** आलिम वो जो खुद तो पा लिया लेकिन बांटा नहीं, जबकि सूफी वो जो खुद भी पाया और दूसरों को भी बांटा।

खुदा के दोस्तों की अन्धेरी रात भी दिन की रौशनी की तरह चमकीली है। (शैख सादी अलैहि रहमान)

आपके अंधेरे की कोई हद नहीं, उसके उजाले की कोई हद नहीं। अगर वो सच्चा मिल जाए तो उससे जा मिलो, उससे जो मिलता है हासिल कर लो। **उसी पर खुदा ने एहसान किया उसी को ईनाम दिया है। वही हक़ को पा लिया है और वही दे सकता है। वही रौशन है और रौशन कर सकता है। वही आपको इस अंधेरे से उजाले की तरफ ले जा सकता है।**

www.sufiyana.com

एक सूफ़ी का ख़त

यहां हम सूफ़ी मख़्दूम यहया मुनीरी अलैहि रहमान के उन तालीमात का ज़िक्र करेंगे, जो आपने अपने खास मुरीद क़ाज़ी शम्सुद्दीन अलैहि रहमान को खत की शक्ल में अता की। दरअस्ल काजी साहब आपकी खिदमत में हाजिर नहीं हो सकते थे इसलिए आपसे इस तरह से (यानी खतो किताबत के ज़रिए) तालिम की दरख्वास्त की थी।

ये भी बुजूर्गों का एक हिकमत भरा अंदाज़ ही है कि काजी साहब के साथ-साथ हम लोगों को भी तालिम मिल रही है।

शुक्र है उन सूफीयों, आलिमों और जांनिसारों का जिनके जरिए ये सूफियाना बातें हम तक पहुंच रही है और दुआ है कि ताकयामत इससे लोग फैजयाब होते रहे।

पांच वक़्त की नमाज़ें दरअस्ल शबे मेराज की यादगार हैं।

नमाज़ ए इश्क़

नमाज़ में तौहीद भी है, रोज़ा भी है, ज़कात भी है, हज भी है और जिहाद भी है।

www.sufiyana.com

ऐ मेरे दोस्त शम्सुद्दीन! रब तुम्हे हमेशा की नेकबख़्ती नसीब करे। सुनो, यूं तो मुरीद का तरीका ये है कि जो भी तालीम दी जाए उस पर साफ दिल से अमल करे और नफ़्सानियत से दूर रहे। और नवाफ़िल, तिलावते कुरान, ज़िक्र व फ़िक्र करता रहे। लेकिन याद रहे **पीर की बगैर इज़ाज़त कोई नफ़्ली इबादत दुरूस्त नहीं**।

सारी आमाल व इबादतों में नमाज़ की बात ही कुछ और है। इसमें असरार (छिपे हुए भेद) हैं और असरारे–मामलात दर मामलात हैं। वो भी ऐसे कि बयान करना ही मुश्किल है। बुजूर्गों ने कहा है जिसने इस मज़े को चखा नहीं, उसने इसे जाना नहीं।

पांच वक़्त की नमाज़ें दरअस्ल शबे मेराज की यादगार हैं। हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने काबा कौसेन से इस तोहफे को हमारे लिए लाए हैं। देखो इससे कितनी मज़ेदार बात निकलती है। हमारी औकात कुछ भी नहीं और न ही कोई रूतबा है। हमें जिस्मानी मेराज होना तो दूर, इतना दम भी नहीं कि बुराक पर बैठकर सैरे मलकूत के लिए जाएं। तो फिर क्या वजह थी कि इस उम्मत को ये दौलते अज़ीम नसीब हुई। और उस पर हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ये फरमाना कि "**नमाज़ मोमीन की मेराज है**"।

> बेदारी के आलम में हज़रत बिलाल अलैहि रहमान से कहते- 'ऐ बिलाल! नमाज़ से मुझको राहत पहुंचाओ। दिल मेरा जल रहा है, जल्दी करो, अज़ान दो और नमाज़ का सामान करो, कि इस दिल को राहत मिलें'।

अब देखो तुम्हें ये मेराज किस तरह नसीब हुई। पहले तुमने तहारत की, पाक साफ कपड़े पहने। फिर धीरे धीरे मस्जिद की तरफ चले और अपने जैसे लोगों के साथ खुदा की बंदगी के लिए खड़े हो गए। फिर हुक्म के मुताबिक नमाज़ अदा की। क्या इतनी आसान है मेराज?

अल्लाह ने नमाज़ में सारे अरकान डाल दिए हैं। **तौहीद** ऐसे कि नमाज़ अल्लाह की हम्द से शुरू होकर, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दरूद पर खत्म होती है। नमाज़ में तुम हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की अदाओं की नकल करते हुए खुदा की हम्दो सना करते हो। **रोज़ा** ऐसे कि रोज़ा में कुछ खाते पीते नहीं है और नमाज़ में भी कुछ खाया पिया नहीं जाता। बल्कि रोज़ा में सोने की चलने फिरने की इज़ाज़त है जबकि नमाज़ में नहीं है। यानि रोज़ा से बढ़कर नमाज़ में रोज़ा होता है।

ज़कात ऐसे कि जब नमाज़ में ये पढ़ा जाता है "ऐ अल्लाह! तू मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और मेरे नस्ल को और सारे ईमानवालों को बख़्श दे", तो तुम खुद भी खुदा की रहमत से मालामाल होते हो और लोगों को भी उसमें से बांट रहे होते हो। **हज** ऐसे कि जिस तरह हज में एहराम व इहलाल है, उसी तरह नमाज़ में तहरीमा व तहलीला है। इसमें जिहाद भी है। **जिहाद** ऐसे कि नमाज़ की हालत में तुम अपनी नफ़्स को मार कर पहुंचते हो। तुमने वजू किया गोया जिरह पहन ली, सफ़ में खड़े हुए गोया लश्कर में खड़े हुए और सब लोग इमाम यानि सेनापती की अगुवाई में जंग छेड़ दी है। अपने दुश्मन यानि नफ़्स के खिलाफ़।

नतीजा ये हुआ कि जिस मोमीनीन व मुख्लिसीन ने **नमाज़ अदा की, उसने जकात भी अदा की चाहे उसकी हैसियत हो न हो, उसने हज भी किया चाहे उसके लायक हो न हो, उसने रोजा भी रखा चाहे ताकत हो न हो।** इससे समझ में आता है कि नमाज़ क्या चीज़ है और इसमें कितने राज़ छिपे हुए हैं।

इसलिए इसमें अदब रखना बेहद ज़रूरी है। हरगिज़ हरगिज़ बेबाकी या बेअदबी से इसकी जगह में कदम भी न रखें। ये जान लो कि **पैगम्बरों व बड़े बड़े खुदा–रसीदा बंदों की उम्र बसर हो गई इस आरज़ू में कि किस तरह मेराजे कमाल तक पहुंचे।** कुछ किसी तरह पहुंचे तो कुछ खाली ही रहे। दिलो जान से अदा की गई सत्रह रकात में अट्ठारह हजार आलम की मिल्कियत छिपी हुई है।

जब नमाज़ और नियाज़ एक हो जाती है तो बंदा

www.sufiyana.com

हालते तफर्रका से निकल कर नूरे नमाज़ मकामे जमा पर पहुंचता है। अब उसकी ये हालत होती है कि बदन काबा के सामने होता है, दिल बराबर अर्श आला होता है और उसका लतिफा-ए-सिर्र, मुशाहेदा-ए-रब में डूबा हुआ होता है। साहिबे शरह ने ऐसे लोगों की कुछ इस तरह तारीफ़ की है कि 'उनके अनवार ने पर्दों को हटा दिए है और उनके असरार ने अर्श की सैर की'। **जब हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नमाज़ की हालत में होते तो आपके दिल से बहुत जोर जोर से आवाज़ आया करती थी जिसे कुछ दूरी से भी साफ सुना जा सकता था।** क्यों न हो, जिस वक्त आप इस शान से अबुदियत को मजबूत करके नमाज़ का तहरिमा बांधते तो जिस्म मुबारक दिल के महल में, दिल मंजिले रूह के मकाम में, रूह पुरफतुह सिर्र की मंजिल में पहुंचती और शानो अज़मत जलाल जुलजलाल कश्फ़ होती है।

गोया हक़ीक़त की रू से बदन ए नूरानी, मक़ाम ए फतदल्ला [*फिर वो (रब अपने हबीब के) क़रीब हुआ फिर और ज़्यादा क़रीब हुआ।* (कुरान 53:8)] में और रूह पाक मकामे क़ाबा क़ौसैन में होता है। आप जो कुछ मेराज में देख सुन चुके थे, उन सब बातों का नमाज़ के वक़्त फिर से सामना होता है। इसलिए **जो कैफ़ियत मेराज के वक़्त थी, वही नमाज़ के वक़्त हो जाती।** वही कलाम वही नमाज़ वही कैफ़ियत वही मेराज बार बार हर बार तारी होती। जब भी आपके रब की मुहब्बत का शोला भड़कता, आपका दिल रब से मिलने को तड़प उठता तो इस **बेदारी के आलम में हज़रत बिलाल अलैहि रहमान से कहते- 'ऐ बिलाल! नमाज़ से मुझको राहत पहुंचाओ। दिल मेरा जल रहा है, जल्दी करो, अज़ान दो और नमाज़ का सामान करो, कि दिल को राहत मिले'।**

जानते हो नमाज़ में आशिकों का क़िबला क्या है। आशिकों का क़िब्ला जमाले बाकमाले दोस्त के सिवा कुछ नहीं। न काबा न सख़रा न अर्श। जो इस आलमे मिजाज़ी में होता है, वो हर वक्त इबादत में, हर वक्त कैफियत में, हर वक्त नमाज़ में होता है। **जब जमाले महबूब सामने हो तो बेरुकूअ व बेसुजूद नमाज़ होती है।** अब देखो, मस्जिद किब्लतैन में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, 'बैतुल मुक़द्दस' की जानिब रूख करके नमाज़ पढ़ रहे हैं। सहाबी भी उनके पीछे नमाज़ पढ़ रहे हैं। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को रब का हुक्म हुआ और आपने नमाज़ की हालत में ही किबला बदल लिया, यानी अपना रूख़ 'बैतुल मुक़द्दस' से 'खानए काबा' की तरफ कर लिया। उनके पीछे सहाबियों में, जो सिर्फ नमाज़ अदा कर रहे थे, जिनका किबला बैतुल मुक़द्दस ही रहा, वो उसी तरह नमाज़ पढ़ते रहे। लेकिन जो आशिके रसूल थे, जिनका किबला हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम थे, जो उन्हें देखकर नमाज़ पढ़ रहे थे, वो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरह अपना रूख काबा की जानिब कर लिए। **यहां ये नहीं दिखाना था कि आपका किबला, काबा है कि नहीं बल्कि ये दिखाना था कि आपका किबला हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम है कि नहीं?**

> जिसने नमाज अदा की, उसने जकात भी अदा की चाहे उसकी हैसियत न हो, उसने हज भी किया चाहे उसके लायक न हो, उसने रोजा भी रखा चाहे ताकत न हो।

ख़्वाजा ए आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि '**अगर नमाज़ी ये जान ले कि किसकी बारगाह में मुनाजात कर रहा है, तो हरगिज़ किसी और की तरफ़ ख़्याल नहीं जाएगा**'। इसलिए जब नमाज़ की हालत में हज़रत अली अलैहि रहमान के पैर से तीर निकाला गया तो आपको खबर भी न हुई। क्योंकि मुशाहिदे महबूब में उस मुकाम पर थे कि अपने अवसाफ़ से फ़ानी थे।

बंदा होना, ऐब से खाली नहीं, बुराईयों से खाली नहीं। इसलिए वो क्या उसकी तलब क्या? लेकिन उस रब का करम ही ऐसा है कि जब वो नवाज़ता है तो सबको नवाज़ता है, चाहे बादशाह हो या गुलाम, अमीर हो या गरीब। अगर सब मिल कर पूरी ताकत भी लगा दें तो रात में सूरज को नहीं उगा सकते। लेकिन जब सूरज निकल आता है तो उसकी रौशनी को रोक भी नहीं सकते। वो सब पर पड़ेगी। यही खुदाई खसलत सूफ़ीयों में भी पाई जाती है। वस्सलाम।

'वो उनको दोस्त रखता है और वो लोग उसको दोस्त रखते हैं' (कुरान-5:54)

...Next **तौहीद**...

सदस्यता (सब्सक्रीप्शन) लेने के लिए SUBS लिखकर 08878 335522 पर SMS करें।
www.sufiyana.com

मी रक़्साम

नमी दानम चे आख़िर चूं दमे दीदार मी रक़्सम
मगर नाज़म बईं ज़ौक़े के पेशे यार मी रक़्सम

मुझे नहीं मालूम कि आख़िर दीदार के वक़्त क्यूं रक़्स कर रहा हूं
लेकिन अपने इस ज़ौक़ पर नाज़ है कि अपने यार के सामने रक़्स कर रहा हूं

तू आं क़ातिल के अज़ बहरे तमाशा ख़ूने मनरेज़ी
मन आं बिस्मिल के ज़ेरे ख़ंजरे ख़ूंख़ार मी रक़्सम

तू वो क़ातिल है के तमाशे के लिए मेरा ख़ून बहाता है
और मैं वो बिस्मिल हूं के ख़ूंख़ार ख़ंजर के नीचे रक़्स करता हूं

सरापा बर सरापाए ख़ुदम अज़ बेख़ुदी क़ुरबां
बगिरदे मरकज़े ख़ुद सूरते परकार मी रक़्सम

सर से पांव तक जो मेरा हाल है, उस बेख़ुदी पर मैं क़ुरबान जाउं,
के परकार की तरह अपने ही इर्द गिर्द रक़्स करता हूं

बया जानां तमाशा कुन के दर अन्बूहे जांबजां
बसद सामाने रूसवाई सरे बाज़ार मी रक़्सम

आ ऐ महबूब, और तमाशा देख कि जांबजां की भीड़ में,
मैं सैकड़ों रूसवाइयों के सामान के साथ, सरे बाज़ार रक़्स करता हूं

ख़ुशा रिन्दी के पामालश कुनम सद पारसाइ रा
ज़हे तक़्वा के मन बा जुब्बा ओ दसतार मी रक़्सम

वाह मयनोशी, कि जिसके लिए मैंने सैकड़ों पारसाइयों को पामाल कर दिया
ख़ूब तकवा, कि मैं जुब्बा व दस्तार के साथ रक़्स करता हूं

तू हर दम मी सराई नग़्मा व हर बार मी रक़्सम
बहर तरज़े के रक़्सानी मनम ऐ यार मी रक़्सम

तू हर वक़्त जब भी मुझे नग़मा सुनाता है, मैं हर बार रक़्स करता हूं
और जिस धून में रक़्स कराता है, ऐ यार, मैं रक़्स करता हूं

अगरचे क़तर ए शबनम नपायद बर सरे ख़ारे
मनम आं क़तर ए शबनम बनोके ख़ार मी रक़्सम

अगरचे शबनम का क़तरा कांटे पर नहीं पड़ता
लेकिन मैं शबनम का वो क़तरा हूं के कांटे की नोक पर रक़्स करता हूं

मनम 'उसमान हारूनी' के यारे शैख मन्सूरम
मलामत मी कुनद ख़ल्क़े व मन बरदार मी रक़्सम

मैं उस्मान हारूनी अलैहि रहमान, शैख मन्सूर हल्लाज अलैहि रहमान का दोस्त हूं,
मुझे ख़ल्क़ मलामत करती है और मैं सूली पर रक़्स करता हूं

– कलाम –
हज़रत ख़्वाजा उसमान हारूनी अलैहि रहमान
(ख़्वाजा गरीबनवाज़ अलैहि रहमान के पीरोमुर्शिद)

www.sufiyana.com

तालिमाते ख़िज़्र रूमी

रहमतुल्लाह अलैह

शौक़ है गर, हक़ परस्ती का,
तो सुन, ऐ बेख़बर!
कर परस्तिश ज़ाते मौला,
देख सूरत पीर की।

ज़ुबां से ख़ुदा के नाम का विर्द करें
और दिल को जमाले मुर्शिद से रौशन रखें।

तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा...

क़ुरान 2:151

...अल्लाह ही के ज़िक्र से दिल को इत्मीनान मिलता है।

क़ुरान 13:28

हज़रत अबूहुरैरा अलैहि रहमान से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ''जो लोग अल्लाह का ज़िक्र करने बैठते हैं तो उनके चारों तरफ फरिश्ते भी आकर बैठ जाते हैं। अल्लाह की रहमतें बरसने लगती हैं। उन (ज़िक्र करनेवालों) को सुकून व चैन नसीब होता है। अल्लाह अपनी मजलीस में (फरिश्तों व पैगम्बरों की रूहों से) उनका ज़िक्र करता है।''

(मुस्लिम)

www.sufiyana.com

यहां हम सूफ़ी जलालुद्दीन ख़िज़्र रूमी अलैहि रहमान की तालिमात से फ़ैज़ हासिल करेंगे।
आप ज़िक्र की बहुत तालीम फरमाते हैं इसलिए आईए सबसे पहले इसी के बारे में बात करते हैं...

ज़िक्र भाग–1

हज़रत अनस अलैहि रहमान से रवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि
''अल्लाह अल्लाह कहनेवाले किसी शख्स पर क्यामत नहीं आएगी
यानि क्यामत तब तक नहीं आएगी जब तक कि
एक भी अल्लाह अल्लाह कहनेवाला दुनिया में मौजूद है।'' (मुस्लिमः148, अहमदः12682, तिरमिज़ीः2207)

सूफ़ीयों के नज़दीक ज़िक्र के मायने है खुदा को याद करना। अज़कार, ज़िक्र का बहुवचन है। सारे सिलसिलों में ज़िक्र पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। क्योंकि रूहानियत के आला से आला मुकाम व मरतबा हासिल करने के लिए ज़िक्र ज़रूरी है। **रब की राह में सारा दारोमदार ज़िक्र पर है**, इसके बग़ैर कोई उस तक नहीं पहुंच सकता।

हज़रत अब्दुल हई शाह अलैहि रहमान फ़रमाते हैं कि ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा होने से, रहमते मौला होती है और मुरीद, सुलूक में तरक्की करते हुए, उंचे से उंचा मरतबा हासिल करता है। ज़िक्र मकामे क़ल्ब से मकामे रूह तक पहुंच जाता है। यानि मलकूत से ज़िक्र तरक्की करते हुए जबरूत में असर करेगा और ज़ाकिर (ज़िक्र करनेवाले) के क़ल्ब में 'अल्लाह' ज़िक्र इस्म ज़ात जारी होगा। इसके बाद मुरीद और तरक्की करके क़ल्बे मुदव्वर यानि उम्मुद्दिमाग़, जिसको मकामे लाहूत कहते हैं, में पहुंचेगा तो ज़िक्र ''हू'' खुद ब खुद जारी होने लगेगा।

ग़ैर हक़ की तरफ मशगुल रहना दिल की एक बीमारी है। ये तीन तरह के होती है– पहला नफसानी (इन्द्रिय), जिसमें आपका नफ़्स हमेशा आपको बहकाता रहता है, दूसरा वो जो अचानक दिल में आ जाता है, तीसरा वो जिसकी वजह से दिल को सुकून नहीं रहता।

रूह की सही हालत ये है कि वो अपने रब से निसबत रखे और कोई चीज उससे दूर करने वाली न हो। अगर निसबत कायम न हो या इससे दूर करने वाली चीज मौजूद हो या दोनों हो तो ये मरज़े दिल की निशानी है।

इसका सबसे अच्छा **इलाज** ज़िक्र है। लेकिन ज़िक्र का मतलब **सिर्फ जबानी शोरगुल नहीं** है बल्कि दिलो दिमाग बदन में **एक कैफ़ियत तारी** होना चाहिए। इसके लिए एक सूनी व साफ़ जगह पर दोजानू बैठ जाएं और बड़े ही अक़ीदत व मुहब्बत से खुदा के नाम का विर्द करें और **दिल को जमाले मुर्शिद से रौशन रखें**। ऐसा तब तक करें जब तक कि इस ज़िक्र की गर्मी पूरे बदन में रोएं रोएं में महसूस न होने लगे। इसी वक़्त **मकाशिफात व अनवार की आंख खुलती है** और इन्सान इससे फैज़याब होता है।

ज़िक्र से खुद के कुछ न होने का और खुदा का सबकुछ होने का एहसास होता है।

हज़रत मौलाना अब्दुल हई अलैहि रहमान फ़रमाते हैं कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' को ज़िक्र नफ़ी व असबात कहते हैं। इसके चार तरीक़े हैं–

1.क़ादिरिया जली, 2.ज़र्ब ख़फ़ी,
3.पासन्फ़ास ख़फ़ी और
4.हबस–ए–दम ख़फी।

...जारी है...

नोट- ज़िक्र का पूरा तरीका लिखकर नहीं समझाया जा सकता। इसे अपने शैख़ की सरपरस्ती में ही पूरी तरह से अदा किया जा सकता है।

www.sufiyana.com

मसनवी मौलाना रूमी-
सूफ़ीयाना हिकायात, अख़्लाकी तालिमात
और आरिफ़ाना मकाशिफ़ात का
वो नमूना है, जिसकी मिसाल नहीं मिलती।
खुद मौलाना रूमी रहमा कहते हैं कि
इसमें कुरान के राज़ छिपे हैं।
जिस शख़्स की जान में
मसनवी का नूर होगा,
बाक़ी हिस्सा उसके दिल में
खुद ब खुद उतर जाएगा।

तलब

मौलवी हरगिज़ नशुद मौलाए रोम
ता गुलामी ए शम्स तबरेज़ी नशुद
(मौलाना रूमी, मौलाना नहीं बन पाता
अगर हज़रत शम्स तबरेज़ रहमा का गुलाम नहीं होता।)
– मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमा

तलब, रब की राह की पहली ज़रूरत है। ढुंढने और खटखटाने के बगैर हक़ का दरवाजा न मिलता है न खुलता है। और इस दरवाजे की कुन्जी हिम्मत है।

चूं दर मअनी ज़नी बाज़त कुनन्द
पर फिकरत ज़न के शहबाज़त कुनन्द

बुराई या खुबी हो या फिर बेवकूफी हो, किसी पर यहां रोक नहीं। अगर एक मक़सद हो, उसके लिए दिल की लगन हो और हिम्मत हो तो बस फिर कामयाबी ही कामयाबी है।

मगर अन्दर खूब व ज़श्ते खवेश
बगर अन्दर इश्क व बर मतलूब खवेश
मगर आं के तो हक़ीरी या ज़ईफ़
बगर अंदर रहमत खुदाए शरीफ़

इस सफर के लिए किसी साज़ो सामान की ज़रूरत नहीं। बिना किसी काबिलियत वाला गरीब अदना भी इस राह में उड़ने के काबिल है। यानि बेबस भी उड़ान भर सकता है। **पानी पर पहुंचने के लिए लबों की खुश्की खुद गवाह है** कि ज़रूर मिलेगा। तेरी प्यास ही तेरी रहनुमा है। **प्यास से होंठों का सुख जाना दरअस्ल खुद पानी की तरफ से इशारा है** कि ये परेशानी, पानी तक पहुंचा कर रहेगी।

जुस्तजू और जद्दो जहद मत छोड़ो क्योंकि पानी के बग़ैर प्यास का बुझना मुमकीन नहीं। और इतमिनान रखो कि पानी तक पहुंचोगे ही, क्योंकि **तुम ही नहीं ढुंढ रहे हो उसे, पानी को भी तुम्हारी प्यास है।**

खुश्की लब हस्त पैग़ामे ज़ आब
के बमाअत आरद यक़ीन इं इज़्तेराब
तिश्नगां गर आब जवेन्दा ज़ जहां
आब हम जवेद बआलम तिश्नगां

जुस्तजू हर क़िस्म की रूकावटों को दूर कर देती है। यही आपकी लावलश्कर है और यही आपके जीत की ज़मानत भी है। ये इत्तेफ़ाक़ और क़िस्मत की बात है कि

www.sufiyana.com

कभी कभी बेतलब भी खज़ाना मिल जाता है लेकिन इस वजह से जुस्तजू छोड़ना बेवकूफी है।

ज़ौक़ तलब पैदा करने के लिए तालिबों से दोस्ती रखना दवा का काम करती है। **तलब सोच समझकर हो या किसी की नकल कर के हो, कभी बेकार नहीं जाती।** ये भी सच है कि नकल करने वालों के लिए खतरा ज्यादा है अंदरूनी भी और बाहरी भी। लेकिन हक़ की रौशनी उसे सहारा देती है और शको शुब्ह के बादल छट जाते हैं।

जुस्तजू, किसी ग़रज से हो या बेग़रज हो, हक़ की कशिश खुद ब खुद खिंच लेती है। तलब की वजह कुछ भी हो उसकी अहमियत नहीं, सिर्फ सच्ची तलब ही जरूरी है। जो गिरफतार करने वाला है वही तलब पैदा करता है।

गर मोहिब्ब हक़ बूद लेग़ैरा, के नयाल दायमन मन खैरा।
नूरे हक़ बर नूरे हुस्न राकिब शूद, वआं गहे जां सूए हक़ राग़िब शूद।

खुद तो मिट लूं,
उनके पाने की नहीं मुश्किल मुझे।
मिल ही जाएगा मुझी में,
वो संगे दरे महफिल मुझे।
इश्क की गर्मी से पैदा,
दिल में होगी जब खलिश,
खैंच लेगी अपनी जानिब,
देखना मंज़िल मुझे।
(ख़िज़्र रूमी)

लयक पैदा नेस्त आं राकिब बरो, जुज़ बआसार व बेगुफ्तार नको।

ताक़त की अहमियत नहीं है। मक़सद कितना ही बड़ा क्यूं न हो और तुम कितने ही छोटे क्यों न हो, जुस्तजू होनी चाहिए। तेज़ चलें या धीरे चलें, दोनों ही मंज़िल पर पहुंचते हैं, कोई जल्दी तो कोई देर से। तुम्हारा काम तो ये है कि अपनी तमाम ताक़तों को लगा दो और अपनी सोच को एक जगह केन्द्रित कर दो। इस संजीदा जद्दो जहद और सच्ची तलब के लिए पहली शर्त सच्ची लगन और दिली तड़प है। और इसके लिए अपनी ख्वाहिशात को रब के हवाले कर देना ज़रूरी है। हक़ के ताबेअ हो जाने की पहचान ये है कि आमाल व अक़वाल (कथनी करनी) में नेकी ज़ाहिर होने लगती है।

और **ये तो सोचो ही मत कि उस बारगाह में कैसे हमें जगह मिल सकती है, हम उसके लायक़ नहीं हैं क्योंकि वो बारगाह बड़े रहीम व करीम का है।** इतना लिहाज़ रखो कि उस वादी में हर तालिब (तलब करने वाला) का एक मक़ाम है और जहां से इजाज़त व दस्तूर के बग़ैर आगे जाना मुमकिन नहीं। तुम तो तलब और जुस्तजू से काम रखो, यही तुम्हे मंज़िले मक़सूद तक पहुंचाएगी।

www.sufiyana.com

तसव्वुफ़

सूफ़ी, शरीअत के ज़ाहिरी अरकान के साथ साथ बातिनी अरकान भी अदा करते हैं। इस ज़ाहिरी और बातिनी शरीअत के मेल को ही तसव्वुफ़ कहते हैं। यही पूरे तौर पर इस्लाम है, यही हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुकम्मल शरीअत है। क्योंकि इसमें दिखावा नहीं है, फरेब नहीं है। इसमें वो सच्चाई वो हक़ीक़त वो रूहानियत समाई हुई है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रब से अता हुई, जो हर पैगम्बर अपने सीने में लिए हुए है। इसी तसव्वुफ़ को सीना ब सीना, सिलसिला ब सिलसिला, सूफ़ी अपने मुरीदों को अता करते हैं। और रब से मिलाने का काम करते हैं। यहां हम उसी तसव्वुफ़ के बारे में बुजुर्गों के क़ौल का तज़किरा कर रहे हैं।

ग़ौसपाक अब्दुल क़ादिर जिलानी अलैहि रहमान फरमाते हैं–

तसव्वुफ़ تصوف चार हर्फ से मिल कर बना है–

त स व फ

ت ص و ف

'ते' 'स्वाद' 'वाव' 'फे'

त ت

लफ्ज़ 'ते' (त)

ये **तौबा** को ज़ाहिर करती है। इसकी दो किस्में हैं एक ज़ाहिरी और दुसरी बातिनी (छिपी हुई)। जाहिरी तौबा ये है कि इन्सान अपने तमाम जाहिरी बदन के साथ गुनाहों और बुरे अख्लाक से बंदगी व फरमाबरदारी की तरफ लौट आए और बुरे चाल चलन को छोड़कर अच्छाई को अपना ले।

बातिनी तौबा ये है कि इन्सान अपने छिपे हुए तमाम बूरी आदतों को छोड़कर अच्छी आदतों की तरफ आजाए और दिल को साफ कर ले। जब दिल की सारी बुराई, अच्छाई में तब्दील हो जाए तो 'ताअ' का मुकाम पूरा हो जाता है और ऐसे शख्स को ताएब कहते हैं।

स ص

लफ्ज़ 'स्वाद' स

ये **सफा (पाक)** को ज़ाहिर करता है। सफा की दो किस्में हैं – कल्बी और सिर्री। सफा ए कल्बी, ये है कि इन्सान नफ्सानियत से दिल को साफ कर ले, दुनिया व दौलत के लालच से बचे और अल्लाह से दूर करनेवाली तमाम चीजों से परहेज़ करे।

इन सारी दुनियावी चीजों को दिल से दूर करना बगैर जिक्रुल्लाह के मुमकीन नहीं। शुरू में जिक्रबिलजहर किया जाए ताकि मुक़ामे हक़ीक़त तक पहुंचा जा सके जैसा कि रब ने फ़रमाया –

सच्चे ईमानदार तो बस वही लोग हैं कि जब (उनके सामने) खुदा का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल मचल जाते हैं। (कुरान 8:2)

यानि उनके दिलों में अल्लाह का खौफ पैदा हो जाए। ज़ाहिर है ये खौफ सिर्फ तभी पैदा हो सकता है जब दिल लापरवाही की नींद से जाग जाए और ज़िक्रे खुदा से दिल का जंग उतार ले।

खशियत (खौफ़) के बाद अच्छाई और बुराई जो अभी तक छिपी होती है, उसकी सूरते दिल पर नक्श हो जाती है जैसा कि कहा जाता है कि आलिम नक्श बिठाता है और आरिफ चमकाता है।

सफाई सिर्री का मतलब ये है कि इन्सान मासिवा अल्लाह को देखने से परहेज़ करे और गैरूल्लाह को दिल में जगह न दे। और ये वस्फ असमा–ए–तौहीद का लिसान बातिन से मुसलसल विर्द करने से हासिल होता है। जब ये तसफिया हासिल हो जाए तो 'साद' का मकाम पूरा हो जाता है।

www.sufiyana.com

सच्चे ईमानदार तो बस वही लोग हैं कि जब (उनके सामने) ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल मचल जाते हैं। (कुरान 8:2)

व, و

लफ़्ज़ 'वाव' (व)

ये **विलायत** को जाहिर करता है और तसफिया पर मुरत्तब होती है।

बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म। (कुरान 10:62)

विलायत के नतीजे में इन्सान अख्लाके खुदावन्दी के रंग में रंग जाता है। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया – अख्लाके खुदावन्दी को अपनाओ।

यानी सिफाते खुदावन्दी से मुतस्सिफ हो जाओ। विलायत में इन्सान सिफाते बशरी का चोला उतार फेंकने के बाद सिफाते खुदावन्दी की खिलअत पहन लेता है।

हदीसे कुदसी में है– 'जब मैं किसी बन्दे को महबूब बना लेता हूं तो उसके कान बन जाता हूं, उसकी आंख बन जाता हूं, उसके हाथ बन जाता हूं और उसकी जबान बन जाता हूं। (इस तरह) वो मेरे कानों से सुनता है, वो मेरी आखों से देखता है, मेरी ताकत से पकड़ता है, वो मेरी जुबान से बोलता है और मेरे पांव से चलता है।'

जो इस मकाम पर फाएज़ हो जाता है वो गैर-अल्लाह से कट जाता है।

'और आप (ऐलान) फरमा दीजिए, आ गया है हक़ और मिट गया है बातिल। बेशक बातिल था ही मिटने के लिए' (कुरान 17:81)

यहां 'वाव' का मुकाम मुकम्मल हो जाता है।

फ ف

लफ़्ज 'फे' (फ)

ये **फ़नाफिल्लाह** को ज़ाहिर करता है। यानि ग़ैर से अल्लाह में फ़ना हो जाना। जब बशरी सिफ़ात फ़ना हो जाती है तो खुदाई सिफ़ात बाक़ी रह जाती है। और खुदाई सिफ़ात न फ़ना होती है और न फ़साद का शिकार।

हर चीज हलाक होने वाली है सिवाए उसकी ज़ात के। (कुरान 28:88)

पस अब्दे फानी-रब-बाक़ी

(रब की रज़ा के साथ बाक़ी रह जाता है।)

बंदा-फानी-का-दिल-सरबानी

(रब की नजर के साथ बाक़ी हो जाता है।)

सारी चीजें फ़ानी है सिवाए उन आमाले सालेहा के जिनको सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए किया जाए। रब का राज़ी-ब-रज़ा होना ही मकामे बक़ा है।

उसकी बारगाह तक अच्छी बातें (बुलन्द होकर) पहुंचतीं हैं और अच्छे काम को वह खुद बुलन्द फरमाता है। (कुरान 35:10)

जब इन्सान फ़नाफ़िल्लाह के मकाम पर फ़ाएज़ हो जाता है तो उसे आलमे कुरबत में बक़ा हासिल होती है। आलमे लाहूत में, यही अंबिया व औलिया के ठहरने की जगह है। *पसन्दीदा मक़ाम में उस सारी कुदरत रखने वाले बादशाह की बारगाह में (क़रीब) होंगे।* (कुरान 54:55) *ऐ ईमानदारों खुदा से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ।* (कुरान 9:119)

जब कतरा समंदर से मिल जाता है तो कतरे का अपना वजूद नहीं रहता। किसी शायर ने क्या खूब कहा है– अल्लाह की तमाम सिफ़ात व अफ़आल कदीम में है, जो ज़वाल पज़ीर होने से महफूज़ है। मक़ामे फ़नाहियत में सूफ़ी हक के साथ हमेशा के लिए बाक़ी हो जाता है।

वही लोग जन्नती हैं कि हमेशा उसमें रहेंगे। (कुरान 2:82)

www.sufiyana.com

यक वली यक रूई

मौलाना जामी अलैहि रहमान फरमाते हैं-

अल्लाह ने इन्सान को ऐसा नहीं बनाया कि उसके पहलू में दो दिल हों। जिसने तूझे जिन्दगी की नेअमत दी है उसी ने तेरे पहलू में एक दिल भी रख दिया है। ताकि उस वाहिद-अल्लाह (एक-ईश्वर) की मुहब्बत में तुझे यक वली (एक मक़सद) व यक रूई (एकाग्रता) हासिल हो। उसके अलावा किसी और से तुझे कोई वास्ता न हो और तू अपने आप को उसी की इबादत के लिए वक्फ़ कर (छोड़) दे। ये मुमकीन नहीं कि एक दिल के टुकड़े टुकड़े करके अलग अलग कामों में लगा दिया जाए-

रूख तेरा है किबलाए वफा की जानिब।
तन परदा है क्यूं ज़हन रसा की जानिब।।
बेहतर है कि दिल को न बहुत रोग लगाएं।
एक दिल है, लगा उसको खुदा की जानिब।।

फ़ना व बक़ा

मौलाना जामी अलैहि रहमान फरमाते हैं-

खुदाए बुलन्द बरतर के मासिवा (सूफी, अल्लाह के अलावा जो कुछ भी है उसे मासिवा कहते हैं) जो कुछ भी है वो आनी व फानी (नश्वर) है। दुनिया की हकीकत एक गुमान है जिसका कोई वजूद नहीं और जाहिरी सूरत इसकी महज एक वहमी (झूटी) वजूदसी है। कल इसका कोई वजूद न था, न आगे रहने वाला है। जाहिर है कि कल इसका एक अन्जाम होगा। तो उम्मीदों आरजूओं का गुलाम क्यों बना हुआ है। छोड़ झूठी चमक दमक रखने वाली नापाएदार चीजों को और उस हमेशा रहने वाले रब से जुड़ जा। वक्त के कांटों से उसकी बंदगी का चेहरा कभी घायल नहीं हो सकता।

हर शक्ले हसीन, तुझको लगी है जो भली,
वो ज़ेरे फलक से जल्द रूपोश हुई।
दिल उस से लगा जो जिन्दा व पाइन्दान है,
वो ज़ात रहेगी और हमेशा से रही।।
दिल जाके सनमखानों में शरमिन्दा है,
क्या इश्के बुतां से कोई दिल जिन्दा है।
मुझको है जमाले जावेदानी की तलाश,
उस हुस्न का तालिब हूं जो पाइन्दा है।।
जो शै तुझे देती नहीं पैगामें बका,
आखिर वही लाएगी तेरे सर पे बला।
जिन चीजों से होना है जुदा, बादुल मौत,
बेहतर है कि जीते जी रहो उनसे जुदा।।

www.sufiyana.com

बारिश की बूंद

शेख सादी अलैहि रहमान फरमाते हैं-

बारिश की बूंद, बादल से टपकने लगी। टपकते हुए सोचने लगी कि न जाने मेरा क्या हश्र होना है। मैं पथरीली ज़मीन पर गिरूंगी कि उफान मारते पानी में। कांटे पर गिरूंगी या फूल पर। कुछ देर बाद उसने नीचे समंदर के जोश व फैलाव को देखा। वो शरमिन्दा सी हो गई और खुद को बहुत अदना छोटा समझने लगी। सोचने लगी कि इतने बड़े समंदर के सामने मेरी क्या हक़ीक़त। मेरी क्या बिसात।

तभी सीप ने अपना मुंह खोल दिया कुदरत ने उस कतरे (पानी की बूंद) को सीप में महफूज़ कर दिया। वो बूंद खुद को मिटाकर, मोती बन गई और बादशाह के ताज में सजी।

छोड़ अपनी बुलन्दी, ईख़्लास कर इख्तियार
रूतबा मस्जिद के मीनार का है कम, मेहराब से

खुदा ने इन्सान को मिट्टी से बनाया और शैतान को आग से। शैतान ने अपने आग होने पर घमंड किया और हमेशा के लिए दूत्कारा हुआ मरदूद हो गया। जबकि आदम अलैहि रहमान ने अपनी चूक को माना, खुदा की बारगाह में आजिज़ी से खुद को छोटा समझकर गिरयावोज़ारी किया। इसके ईनाम में खुदा ने आदम को तमाम इन्सानों का जद्दे आला यानी पितामह बना दिया।

तकब्बुर अज़ाज़ील रारव्वार करद
बज़िन्दाने लअनत गिरफ्तार करद

अक्लमंद इन्सान

शेख सादी अलैहि रहमान फरमाते हैं-

न गोयद अज सरे बाजीचा हर्फे।
कर्जा पन्दे नगीरद साहबे होश।।
व गर सद बाबे हिकमत पेशे नादां।
बरब्बानन्द आयदश बाजीचह दरगोश।।

तर्जुमा– अक्लमन्द इन्सान खेल खेल में भी अच्छी बातें सीख लेता है जबकि बेवकूफ इन्सान बड़ी बड़ी किताबों के सौ पाठ पढ़ने के बाद भी बेवकूफी ही सीखता है।

लुकमान हकीम से किसी ने पूछा आपने अदब और तमीज किससे सीखी?, तो अपने फरमाया 'बेअदबों से', 'वो कैसे' पूछा गया तो जवाब मिला 'मैंने उनकी बेवकूफी और बूरी आदतों से परहेज किया। मैं उनकी बेअदबी व बदतमीजी से दूर रहा, खुद ब खुद अदबवाला बन गया। अक्लमन्द इन्सान खेल खेल में भी अच्छी तालीम हासिल कर लेता है जबकि बेवकूफ बड़े बड़े ग्रंथ पढ़कर भी बेवकूफी ही सीखता है।

एजेंसी लेने के लिए AGEN लिखकर 08878 335522 पर SMS करें।

www.sufiyana.com

दुआ

और तुम्हारा परवरदिगार इरशाद फ़रमाता है कि तुम मुझसे दुआएं मांगो, मैं तुम्हारी (दुआ ज़रूर) कुबूल करूंगा। (कुरआन-60:40)

खुदा तक न तो (कुरबानी के) गोश्त ही पहुंचेंगे और न ही खून, (हां) मगर उस तक तुम्हारी (नेकी व) परहेज़गारी (ज़रूर) पहुंचेगी।
(कुरआन -37:22)

पस तुम अल्लाह को ईख़्लास के साथ पुकारो अगरचे काफ़िरों को नागवार गुज़रे। (कुरआन-14:40)

अल्लाह के नज़दीक दुआ से ज्यादा कोई चीज़ मुकर्रम नहीं।
(इब्ने माजा-280, मिश्कारत-194.11)

जो चाहता है कि मुसीबत व परेशानी के वक्त उसकी दुआ कुबूल हो तो उसे चाहिए कि आराम व फराखी के वक्त दुआ करता रहे।

दुआ इबादत की अस्ल है। (तिरमिजी2.173ए मिश्कात-194.10)

अल्लाह से उसका फ़ज़ल मांगा करो क्योंकि अल्लाह सवाल और हाजत तलबी को पसंद फरमाता है और सबसे बड़ी इबादत ये है कि इन्सान सख़्ती के वक्त फ़राख़ी का इंतेज़ार करे। (मिश्कात-195.15)

जो शख़्स अल्लाह से अपनी हाजत का सवाल नहीं करता, अल्लाह का उस पे गज़ब होता है। (यानी दुआ नहीं करने वाले से खुदा नाराज़ होता है।)
(मिश्कात-195.16, हाकिम-491)

अपने फीडबैक भेजने के लिए FEED लिखकर 08878 333522 पर SMS करें।
www.sufiyana.com

दुआ मोमिन का हथियार है और दीन का सुतून और आसमान व ज़मीन का नूर है। (हाकिम)

जिस शख़्स के लिए दुआ के दरवाजे खोल दिए गये, उसके वास्ते रहमत के दरवाजे खुल गये और अल्लाह से कोई दुआ इससे ज्यादा महबूब नहीं मांगी गयी कि इन्सान उससे आफियत (सेहत, सलामती, अमन, हिफाजत) का सवाल करे। (तिरमिजी, हाकिम, मिश्कात–195.17)

गुनाह या रिश्ता तोड़ने की दुआ मांगना हराम है और ऐसी दुआ अल्लाह कुबूल नहीं करता।

(मिश्कात–196.35)

कुबूलियत का यकीन कामिल रखते हुए अल्लाह से दुआ मांगो (जरूर कुबूल होगी)। अल्लाह लापरवाही की दुआ कुबूल नहीं करता। (मिश्कात 2.195)

दुआ से नाउम्मीद न हो क्योंकि दुआ के साथ कोई हलाक नहीं होता।

(हाकिम–494)

जो भी दुआ की जाती है वो कुबूल होती है बशर्ते कि उसमें किसी गुनाह या नफ़रत की दुआ न हो। दुआ कुबूल होने की तीन सूरतें हैं –

1. जो मांगी जाए वही मिल जाए
2. मांगी हुई चीज़ के बदले आख़िरत का अज्र व सवाब दे दिया जाए
3. मांगी हुई चीज़ तो न मिले मगर कोई आफ़त या मुसीबत जो आने वाली थी टल जाए।

(मुस्नद अहमद–10709)

जो चाहता है कि मुसीबत व परेशानी के वक़्त उसकी दुआ कुबूल हो तो उसे चाहिए कि आराम व फ़राख़ी के वक़्त दुआ करता रहे। (तिरमिजी 2.175, मिश्कात1.195)

और **दुआ निजात दिलाती उस बला से जो आ चुकी है और (उससे भी) जो बला आने वाली है।** जब बला व मुसीबत आती है तो दुआ उसे दूर करती है और जो बला व मुसीबत आने वाली होती है उससे दुआ लड़ने लगती है। उस वक़्त तक जब तक कि उससे निजात न मिल जाए।

(मिश्कात–195)

दुआ के लिए न कोई वक़्त शर्त है न तहारत न वजू। दुआ में किसी मख़्सूस अल्फ़ाज़ की कैद नहीं। दुआ के लिए हाथ उठाना भी जरूरी नहीं।

दुआ में ज़ाहिरी तौर पर कोई शर्त नहीं है, मगर यक़ीन व इख़्लास का होना जरूरी है। यकीन ये रहे कि ज़मीन व आसमान के सारे ख़ज़ाने अल्लाह के पास है, वो चाहेगा तो ही अ़ता होगा और उसे अ़ता होगा, जो मांगेगा।

इख़्लास ये रहे कि **मांगना दिल की गहराइयों से हो, उसमें शिद्दत (तड़प) हो, सख्त मोहताजी हो, कामिल बेबसी हो।** कुरआन में इसे "इजतेराब" लफ़्ज़ से ताबीर किया गया है। यही यक़ीन दरअस्ल, दुआ की रूह है। "इन्नमल– आमालो– बिन्नियात" सब कामों का दारोमदार नियत पर है। दुआ आजिज़ी व इन्केसारी के साथ की जाए, ग़फ़लत बेपरवाई से की गई दुआ कुबूल नहीं होती।

अपने परवरदिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके - चुपके दुआ करो।

(कुरआन–55.7)

जो शख़्स अल्लाह से अपनी हाजत का सवाल नहीं करता अल्लाह का उस पे गजब होता है। (यानी दुआ नहीं करने से खुदा नाराज़ होता है)

दुआ कुबूल क्यूं नहीं होती?

हज़रत इब्राहीम अदहम अलैहि रहमान से किसी ने पूछा कि क्या वजह है कि हमारी दुआएं कुबूल नहीं होती। इस पर आपने फरमाया–'तुम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचानते हो लेकिन उनके बताए रास्ते पर नहीं चलते, कुरान को पढ़ते हो मगर उस पर अमल नहीं करते, खुदा की दी हुए नेअमत खाते हो लेकिन उसका शुक्र अदा नहीं करते, शैतान को जानते हो मगर शैतानियत से नहीं बचते, मौत से आगाह हो मगर उसकी तैय्यारी नहीं करते, मुर्दे को दफन करते हो मगर इबरत हासिल नहीं करते। **तुम अपने ऐबो बुराईयों को सुधारना छोड़ दिया और दूसरों के ऐब गिनने में लगे हो।** असल व सहीं काम करने के बजाय ग़लत व बुरे कामों में लगे हो और पूछते हो कि दुआ क्यों कुबूल नहीं होती।'

हर किसी के लिए दुआ करते रहें,
हो सकता है आपकी दुआ से किसी का काम बन जाए।

...Next **तौबा**...

www.sufiyana.com

चार तरकी ताज

यहां हम ख़्वाजा ए चिश्तिया के मल्फ़ूज़ात से फ़ैज़ हासिल करेंगे। मल्फ़ूज़ात, सूफ़ीयों की ज़िंदगी के उस वक़्त के हालात और तालिमात का ख़जाना होता है। जिसे कोई ऐसे मुरीद ही लिख सकते है, जो ज़्यादा से ज़्यादा पीर की सोहबत से फ़ैज़याब हुए हो। इस बार हम हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया अलैहि रहमान के मल्फ़ूज़ात ''अफ़ज़ल उल फ़वाएद'' (यानी ''राहत उल मुहिब्बिन'') में से कुछ हिस्सा नकल कर रहे हैं जिसे उनके मुरीद हज़रत अमीर खुसरो अलैहि रहमान ने लिखा है।

बतारीख़ 24 माह ज़िलहिज्जा 713 हिजरी, इस बन्दए नाचीज़ खुसरो वल्द हुसैन को हज़रत निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही अलैहि रहमान की क़दमबोसी का शरफ़ हासिल हुआ। जिस रोज़ मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मेरे दिल में ये नियत थी कि पहले मैं आपकी बारगाह में बैठ जाउंगा और अगर आप मुझे खुद बुलाएंगे तो ही मैं बैअत होउंगा। मैंने ऐसा ही किया, आस्ताने पर जा कर बैठ गया। थोड़ी ही देर में आपके एक खादिम बशीर मियां ने आकर सलाम किया और फरमाया कि हुज़ूर आपको याद फरमा रहे हैं, उन्होंने कहा कि बाहर एक तुर्क बैठा है, जाओ उसे बुला लाओ। मैं फौरन आपकी खिदमत में हाजिर होकर सर ज़मीन पर रख दिया। आपने कहा सर उठाओ, अच्छे मौके पर आए हो, खुश आए हो। फिर निहायत इनायत व शफ़क़त से मेरे हाल पर दुआ फरमाई और मुझे शरफ़े बैअत अता फरमाई। ''खास बारानी'' और चारतरकीताज इनायत फरमाई।

फिर पीर की खिदमत में मुरीद होने के बारे में गुफ्तगू शुरू हुई। हज़रत निज़ामुद्दीन अलैहि रहमान ने फरमाया कि जिस रोज़ मैं बाबा फ़रीद गंजशकर अलैहि रहमान का मुरीद हुआ तो आपने फरमाया कि ऐ मौलाना निज़ामुद्दीन! मैं किसी और को विलायत ए हिन्दुस्तान का सज्जादा देना चाहता था लेकिन ग़ैब से आवाज़ आई कि ये नेअमत हमने निजामुद्दीन बदायूंनी के लिए रखी है, ये उसी को मिलेगी।

फिर निहायत रहमत व शफ़क़त मेरे हाल पर फरमाई और चारतरकीताज मेरे सर पर रखी और ये हिकायत बयान फरमाई – **इस ताज के चार खाने होते हैं, पहला शरीअत का, दूसरा तरीक़त का, तीसरा मारेफ़त का और चौथा हक़ीक़त का।** पस जो इनमें इस्तेकामत से काम ले उसके सर पर इस ताज का रखना वाजिब है।

आप ये बयान फरमा ही रहे थे कि मौलाना शम्सूद्दीन यहया, मौलाना बुरहानुद्दीन ग़रीब और मौलाना फ़खरूद्दीन कदमबोस हुए। हुज़ूर आगे फरमाते हुए कहते हैं कि एक टोपी एकतरकी, दूसरी टोपी दोतरकी, तीसरी टोपी तीनतरकी और चौथी टोपी चारतरकी।

फिर ताज के असल में फरमाते हैं कि मैंने अपने पीरो मुर्शिद से सुना है कि ख्वाजा अबुल लैस समरकन्दी अलैहि रहमान की किताब में हज़रत हसन बसरी अलैहि रहमान की रवायत लिखी है कि एक रोज़ पैगम्बरे खुदा हज़रत मुहम्मद अल्लल्लाही अलैहि वसल्लम बैठे थे और आसपास सहाबी बैठे थे कि तभी हज़रत जिबरईल अलैहि रहमान चार ताज लेकर तशरीफ लाए और फरमाया कि खुदा का हुक्म है कि ये चार ताज जन्नती हैं, इनको आप अपने सर पर रखें। बाद अजान आप जिसे चाहे इनायत फरमाएं और

www.suryana.com

अपना खलिफा बनाएं। **हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम एकतरकीताज अपने सर पर रखे, फिर उतार कर हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ अलैहि रहमान के सर पर रखे, इसी तरह दोतरकीताज हज़रत उमर अलैहि रहमान के सर पर रखे, तीनतरकीताज हज़रत उस्मान ग़नी अलैहि रहमान के सर पर रखे और चारतरकीताज हज़रत मौला अली अलैहि रहमान के सर पर रखे और फरमाए कि ये आपका ताज है।**

बाद अज़ान फरमाते हैं कि तबक़ात के मशाएख और जुनैदिया तबका ने फरमाया – हमें इस तरह मालूम हुआ कि चारतरकीताज की असल क्या है। पहले खुदा से हुजूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम को अ़ता हुआ और उनसे हमको मिला। बिलकुल वैसे ही जैसे ख़रक़ा, मेराज की रात अ़ता हुआ था।

आगे हज़रत निजामुद्दीन अलैहि रहमान फरमाते हैं कि **एकतरकीताज, जो हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ अलैहि रहमान को पहनाई गई** थी, वो अब्दाल व सिद्दीक़ीन के सर पर रखा जाता है। अल्लाह के सिवा किसी का ख्याल दिल में न हो और तमाम दुनिया के कामों से दूर रहें तो फिर वो शख्स इस ताज के काबिल हैं। इस ताज का हक़ उनके बारे में ये है कि इनके बातिन मुसलसल जिक्र की वजह से नूरे मारफ़त से मुनव्वर होते हैं और इन्हें ज़ाहिरी व बातिनी मक़सूद हासिल होते हैं। अगर साहिबे ताज दुनिया का तालिब हो जाए तो वो इस ताज के लायक नहीं रहता।

> हुजूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम ने हज़रत अली अलैहि रहमान के सर पर चार तरकी ताज रखे और फरमाए कि ये आपका ताज है।

दोतरकीताज जो हज़रत उमर फ़ारूक़ अलैहि रहमान के सर रखी गयी थी, उसे आबिद, अवताद और कुछ मनसूरी भी पहनते हैं। इसका मकसद ये है कि जब इन्सान इसे सर पर रखे तो दुनिया को तर्क कर दे और ज़िक्र करने वाला बन जाए। सिवाए यादे इलाही के किसी और चीज़ में मशगूल न रहे। यहां तक कि अगर हलाल चीज़ उसे मिल जाए तो शाम तक न बचाए, खर्च कर दे और दुनियादारी के पास भी न भटके। ऐसे शख़्स को दोतरकीताज पहनना वाजिब है वरना गुमराह न हो जाए।

तीनतरकीताज, जो हज़रत उस्मान ग़नी अलैहि रहमान के सर रखी गई। वो ज़ाहिद, अहले तहीर, मशाएख तबक़ात और अक्सर अक्लमंद लोग भी पहनते हैं। इससे मक़सूद ये है कि अव्वल गैरूल्लाह से किनारा करे और तमाम लज़्ज़तों शहवतों का लालच छोड़ दे। दूसरे, दिल को हसद (जलन), किना, बुग़्ज़, फ़हश व रिया (दिखावा) जैसे बूरी आदतों से पाक करे। तीसरे सिर्फ और सिर्फ अल्लाह से रिश्ता जोड़े। जब ये हालत पर पहुंचे तो सर पर इस ताज का रखना जाएज़ है वरना जुनैदी तबक़ा में छोटा ठहरेगा।

चारतरकीताज, जो हज़रत मौला अली अलैहि रहमान के सरे मुबारक पर रखा गया, वो सूफ़ी, सादात और मशाएख बुजूर्ग पहनते हैं। इससे मुराद दौलते सआदत है और जो अठारह हज़ार आलम में है, सबके सब इसमें रखा गया है। लेकिन इसके सर पर रख कर चार चीज़ों को दूर रखें ताकि इस चारतरकीताज को रखना दुरूस्त हो। वो चार चीज़ें हैं– अव्वल, दुनिया व दौलत को तर्क करें। दूसरा, "तर्क उल लिसान अन नख्मर उल तज़ामा बज़िक्रुल्लाह" यानि अल्लाह की याद के सिवा और कोई बात न रहे। तीसरा "तर्क उल बसरा मन ग़ैरूल करामा" यानि ग़ैर की तरफ़ नज़र करने से दूर रहे और ग़ैर का न रहे ताकि ग़ैर के लिए अन्धा हो जाए। जब ख्वाजा साहब इस बात पर पहुंचे तो इस क़दर रोए कि सभी हाजिरीन भी रोने लगे, आपने ये शेर इरशाद फरमाया–

अगर बग़ैर रख्त दीदा अम बक्स बयन्द
कश्म बरून बान्गश्त चूं सज़ाश ईं अस्त

फिर फरमाया चौथा ये कि "तहारतुल क़ल्ब मिन हुब्बुल दुनिया" यानि दिल को दुनिया की मुहब्बत से पाक कर ले। पस जब दुनियावी मुहब्बत का जंग, दिल से साफ करके अल्लाह को शामिले हयात कर ले तो ग़ैर, दरमियान से उठ जाएगा और अल्लाह से यगाना हो जाएगा। इस वक्त ये चारतरकीताज सर पर रखने का उसको हक़ होगा।

फिर फरमाते हैं कि क्या ही अच्छा हो **अगर पर्दा दरमियान से उठ जाए और सारे भेद खुल जाएं** और ग़ैरियत दूर हो जाए और ये आवाज़ दी– *"बी यबसरो अवबी यबसरो अव यसमा वबी यनतक़"* **मुझ ही से देखता है, मुझ ही से सुनता है और मुझ ही से बोलता है।**

...Next फ़रमाने पीर –ग़रीबनवाज़ अलैहि रहमान...

www.sufiyana.com

हज़रत राबिया बसरी अलैहि रहमान

हज़रत राबिया बसरी अलैहि रहमान खुदा की खास बंदी, पर्दानशीनों में मख्दूमा, ईश्क़ में डूबी हुई, इबादत गुज़ार, वो पाकिज़ा औरत हैं जिन्हें आलमे सूफ़िया में ''दूसरी मरयम'' कहा गया।

यहां छोटे बड़े का कोई फ़र्क नहीं, यहां मर्द व ज़न (औरत) का कोई फ़र्क नहीं, क्योंकि अल्लाह सूरत नहीं देखता, वो तो दिल देखता है और जब आख़िरत में हिसाब होगा तो नियत को देखकर होगा। लिहाजा जो औरत इबादत व रियाज़त में मर्दों के मुकाबिल हो तो उसे मर्दों की सफ़ में ही शुमार किया जाए क्योंकि रोज़े महशर जब मर्दों को पुकारा जाएगा तो सबसे पहले हज़रत मरयम अलैहि रहमान आगे बढ़ेंगी।

विलादत

जिस रात आप पैदा होने वाली थीं तो घर में इतना तेल भी न था कि नाफ की मालिश की जाए या चिराग़ जलाया जाए और इतना कपड़ा भी न था कि आपको लपेटा जा सके। आपका नाम राबिया (चौथी) रखा गया क्योंकि आप तीन बहनों के बाद पैदा हुईं थीं। आपके वालिद (अब्बा) का ये हाल था कि खुदा के अलावा किसी से कुछ नहीं मांगते यहां तक कि पड़ोसियों से भी कुछ न लेते। इसी परेशानी के आलम में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख्वाब में बशारत दी और तसल्ली देते हुए फरमाया कि ये लड़की बहुत मक़बूलियत हासिल करेगी और इसकी शफ़ाअत से हज़ारों लोग बख़्श दिए जाएंगे। आगे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि इस शहर (बसरा) के हाकिम के पास जाओ और कहो कि वो हर रोज़ 100 मरतबा और जुमा को 400 मरतबा मुझ पर दरूद भेजता है, लेकिन आज भेजना भूल गया। तो इसी की कफ़्फ़ारे के तौर पर तुम्हें 400 दीनार दे दे। ये जानकर हाकिम ने इस बशारत पर बतौर शुक़राना 1000 दीनार फ़क़ीरों में तक़सीम करा दिए और हज़रत राबिया अलैहि रहमान के वालिद को 400 दिनार दिए और ताज़ीमन खुद आकर कहा किसी भी जरूरत पर याद किजिए। इस तरह आपकी विलादत की तमाम ज़रूरतें पूरी की गई।

आपने जब होश संभाला तो वालिद का साया सर से उठ गया और बहनें भी जुदा हो गयीं। एक जालिम ने आपको जबरन कनीज़ बना लिया और कम दाम में आपको बेच भी दिया। वहां आपसे बहुत ज़्यादा काम लिया जाता। एक बार नामहरम को सामने देखकर गिर गईं, जिससे आपका हाथ टूट गया। आपने खुदा की बारगाह में सर-ब-सुजूद होकर अर्ज़ किया कि या अल्लाह! बेमददगार पहले से ही थी, अब लाचार भी हो गई। इसके बावजूद तेरी रज़ा चाहती हूं। इस पर ग़ैब से आवाज़ आई 'ऐ राबिया! ग़म न कर। कल **तुझे वो मरतबा हासिल होगा जिस पर फ़रिश्ते भी रश्क करेंगे।**' ये

www.sufiyana.com

सुन कर आप बहुत खुश हुईं।

आपका मामूल था कि दिन में रोज़ा रखतीं और रात भर इबादत करतीं। एक रात आपके मालिक की नींद खुली तो क्या देखता है कि आप इबादत में मश्गूल हैं और खुदा से अर्ज़ कर रहीं है 'या खुदा, मैं हर वक्त तेरी इबादत करना चाहती हूं लेकिन तूने मुझे किसी की कनीज़ बनाया है इसलिए दिन को तेरी बारगाह में हाज़िर नहीं हो पाती।' ये सुनकर मालिक परेशान हो गया और सोचने लगा इससे ख़िदमत लेने के बजाय मुझे इसकी ख़िदमत करनी चाहिए। अगले दिन उसने आपसे कहा 'आप आज से आज़ाद हैं, आप चाहें तो यहीं रहें या कहीं और जाएं'। इसके बाद आप दिन रात खुदा की इबादत में ही मशगूल रहने लगीं और कभी कभी हज़रत हसन बसरी अलैहि रहमान (जो उस वक्त के बहुत बड़े सूफ़ी थे।) की महफिल में भी शिरकत करतीं।

सफरे हज

एक बार आप हज करने गईं। काबे में पहुंच कर आपने खुदा से दर्याफ़्त किया मैं खाक से बनी हूं और काबा पत्थर का। मैं बिला वास्ते तुझसे मिलना चाहती हूं। इस पर निदा आई 'ऐ राबिया! क्या तू दुनिया के निज़ाम को बदलना चाहती है? क्या इस जहां में रहने वालों के खून अपने सर लेना चाहती है? क्या तूझे मालूम नहीं जब मूसा अलैहि रहमान ने दीदार की ख़्वाहिश की तो एक तजल्ली को तूर का पहाड़ बर्दाश्त नहीं कर पाया?'

काफी अर्से बाद आप जब दोबारा हज करने गयीं तो देखा कि काबा खुद आपके दीदार को चला आ रहा है। आपने फ़रमाया मुझे हुस्ने काबा से ज्यादा, जमाले खुदावन्दी की तमन्ना है। हज़रत इब्राहीम अदहम अलैहि रहमान जगह जगह नमाज अदा करते हुए पूरे 14 साल में जब हज करने मक्का पहुंचे तो **देखते हैं कि काबा गायब है।** खुदा की बारगाह में गिरयावोज़ारी करने लगे इन आंखों से क्या गुनाह हो गया है। तब निदा आई वो किसी ज़ईफ़ा के इस्तेकबाल के लिए गया है। कुछ देर बाद काबा अपनी जगह पर था और एक बुढ़िया लाठी टेकते हुए चली आ रही है। हज़रत अदहम अलैहि रहमान ने कहा ये निज़ाम के ख़िलाफ़ काम क्यूं कर रही हो? तब हज़रत राबिया अलैहि रहमान फ़रमाती हैं तुम नमाज़ पढ़ते पढ़ते यहां पहुंचे हो और मैं इज़्ज़ इंकिसारी के साथ यहां पहुंची हूँ।

यक़ीन

दो भूखे लोग हज़रत राबिया अलैहि रहमान से मुलाकात करने हाज़िर हुए और दौराने गुफ़्तगू खाने की इच्छा जाहिर की। आपके पास दो रोटियां थीं लेकिन तभी एक भीखारी मांगता हुआ पहुंचा तो आपने दोनों रोटियां उसे दे दी। अब आप लोगों के लिए कुछ न था।

थोड़ी देर ही गुजरा था कि एक कनीज़ आपकी ख़िदमत में कुछ रोटियां लेकर हाजिर हुईं। आपने उन रोटियों को गिना तो वो 18 थीं, आपने वापस कर दीं। कनीज़ के बहुत मनाने पर भी आप नहीं मानी। कुछ देर बाद वो कनीज फिर आई और इस बार 20 रोटियां लेकर। आपने कुबूल कर लीं और उन दोनों के सामने रख दीं।

ये सब देखकर उनमें से एक ने आपसे पूछा ये सब क्या माजरा है। तो आपने बताया कि मेरे पास दो ही रोटी थी जो आपको देना चाहती थी, लेकिन तभी भिखारी आ गया। मैंने खुदा से दर्याफ़्त किया कि 'या खुदा! तेरा वादा है कि तू एक के बदले 10 देता है।' फिर मैने दो रोटियां उस भिखारी को दे दी। अब रब के वादे के मुताबिक मुझे 20 रोटियां मिलनी चाहिए, तो कम क्यूं लूं? **मुझे अपने रब पर और उसके वादे पर पूरा यक़ीन है।**

> अगर मैं जहन्नम के डर से इबादत करू तो खुदा मुझे उसी जहन्नम में डाल दे और अगर जन्नत के लालच में इबादत करूं तो खुदा मुझ पर जन्नत हराम कर दे। ऐसी इबादत करे तो खाक इबादत करे। खुदा की बंदगी तो हम पर ऐन फर्ज है, हमें तो हर हाल में करना है, चाहे उसका हमें सिला मिले या न

चादरवाली

एक बार आप इबादत करते करते सो गईं, तभी एक चोर आया आपकी चादर लेकर भागने लगा। लेकिन उसे बाहर जाने का रास्ता नज़र नहीं आया। वो चादर रखकर जैसे ही पलटा, रास्ता दिखने लगा। उसने फिर चादर उठा ली, लेकिन फिर क्या। रास्ता गायब हो गया। उसने कई बार ऐसा किया और हर बार ऐसा ही हुआ। ग़ैब से आवाज़ आई– 'तू खुद पर आफ़त क्यों ला रहा है? इस चादरवाली (राबिया अलैहि रहमान) ने **खुद को खुदा के हवाले कर दिया है। इसके पास शैतान भी नहीं फटकता** तो किसी और की क्या मजाल जो इसे नुकसान पहुंचा सके? **एक दोस्त सो रहा है लेकिन दूसरा तो जाग रहा है।'**

हवा पर मुसल्ला

हज़रत हसन बसरी अलैहि रहमान दरिया में मुसल्ला बिछाकर कहा आइए यहां नमाज अदा कीजिए। आपने कहा– क्या ये लोगों के दिखाने के लिए है। अगर नहीं तो फिर इसकी क्या जरूरत है। आपने हवा पर इतने उपर मुसल्ला बिछाया कि किसी को न दिख सके और फ़रमाया आईए यहां इबादत करते हैं। फिर आपने फरमाया पानी में इबादत एक मछली भी कर सकती है और हवा में एक मक्खी भी नमाज़ पढ़ सकती है। इसका हक़ीक़त से कोई वास्ता नहीं।

एक मजलिस में आपने फरमाया कि **जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चे दिल से मानता है उसे उनके मोजज़ात में से कुछ हिस्सा जरूर मिलता है।** ये अलग बात है कि नबीयों के मोजज़ा को वलियों के लिए करामत कहते हैं।

निकाह

आपसे पूछा गया कि क्या आपको निकाह की ख्वाहिश नहीं होती। तो आपने फरमाया कि निकाह का ताल्लूक तो जिस्म व वजूद से है, जिसका वजूद ही रब में गुम हो गया हो उसे निकाह की क्या हाजत।

मारफ़त

मारफ़त तवज्जह का नाम है और आरिफ़ की पहचान यह है कि वो खुदा से पाकीज़ा दिल तलब करे। जब दिया जाए तो फौरन खुदा के हवाले कर दे ताकि बुराईयों से बचा रहे।

अपने रब को खुश करने के लिए मेहनत के वक़्त इस तरह शुक्र अदा करो जिस तरह नेअमत के वक्त करते हो। तौबा की दौलत भी रब की मर्जी से ही मिलती है वरना लोग तो अपने गुनाहों पर फ़ख़्र करते हैं। अपनी बुराईयों से, गुनाहों से इस तरह तौबा की जाए फिर से तौबा करने की ज़रूरत न पड़े।

आप अक्सर मरीज़ों की तरह सूरत बनाकर इबादत में गिड़गिड़ाती रोती। किसी ने पूछा तो आपने फरमाया कि मेरे सीने में 'खुदा का दर्द' छिपा है। जिसका इलाज किसी हकीम के पास नहीं और न ही तुम्हें वो दिख सकता है। **इसका इलाज सिर्फ 'रब से मिलना' ही है।**

इस चादरवाली ने खुद को खुदा के हवाले कर दिया है। इसके पास शैतान भी नहीं फटकता तो किसी और की क्या मजाल जो इसे नुकसान पहुंचा सके? एक दोस्त सो रहा है लेकिन दूसरा तो जाग रहा है।

खुदा की बंदगी

एक रोज़ एक मजलिस में 'खुदा की बंदगी' यानि इबादत के बारे में बातचीत हो रही थी। आप भी उसमें मौजूद थीं। एक ने कहा कि मैं इबादत इसलिए करता हूं कि जहन्नम से महफ़ूज़ रहूं। एक ने कहा इबादत करने से मुझे जन्नत में आला मकाम हासिल होगा। तब आपने फ़रमाया कि **अगर मैं जहन्नम के डर से इबादत करू तो खुदा मुझे उसी जहन्नम में डाल दे और अगर जन्नत के लालच में इबादत करूं तो खुदा मुझ पर जन्नत हराम कर दे।** ऐसी इबादत भी कोई इबादत है। खुदा की बंदगी तो हम पर ऐन फ़र्ज़ है, हमें तो हर हाल में करना है, चाहे उसका हमें सिला मिले या न मिले। अगर खुदा जन्नत या दोज़ख़ नहीं बनाता तो क्या हम उसकी बंदगी नहीं करते। उसकी बंदगी बिना मतलब के करनी चाहिए।

आज़माईश

किसी ने आज़माईश के लिए पूछा कि ऐसा क्यूं कि नबूव्वत सिर्फ़ मर्दों को ही मिली फिर भी औरतों को खुद पर नाज़ क्यूं। आपने जवाब में कहा– क्या किसी औरत ने कभी खुदाई का दावा किया है। नहीं किया। अल्लाह की मर्ज़ी जिसे चाहे नबूव्वत दे न दे। हम कौन होते हैं उसके ख़िलाफ़ जाने वाले। हमें खुद पर नहीं खुदा की बंदगी पर नाज़ है।

एक शख्स आपसे दुनिया की बहुत शिकायत करने लगा तो अपने फ़रमाया लगता है तुम्हें उसी दुनिया से बहुत लगाव है। तुम जब से आए हो उसी दुनिया का ज़िक्र कर रहे हो। **जिससे बहुत ज़्यादा मुहब्बत होती है, इन्सान उसी का ज़िक्र करता रहता है।** अगर नफ़रत है तो उसकी बात ही मत करो।

विसाल

विसाल के वक्त आपने हाजिर लोगों से कहा यहां से चले जाएं फरिश्तों के आने का वक़्त हो गया है। सब बाहर चले गए। फरिश्ते आए, आपसे दरयाफ़्त किया **ऐ मुतमईन नफ़्स! अपने मौला की जानिब लौट चल**। इस तरह आपका विसाल हुआ। आपने न किसी से कभी कुछ मांगा और न ही अपने रब से ही कुछ तलब किया और अनोखी शान के साथ दुनिया से रूख़्सत हुईं।

...Next **हज़रत ग़रीबनवाज़** अलैहि रहमान...

www.sufiyana.com

मुर्शिद कौन ?

मीम मुर्शिद से मिला
हमको मुहब्बत का सबक़,
रे से राहत मिली
और रहे हमारे मुतलक,
शीन से शिर्क़ हुआ दूर दिल से,
दाल से दस्त मिला
और मिला दिल दिल से।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) को देखकर जो ईमान लाए उसे सहाबी कहते हैं। सहाबी के मायने होते हैं "शरफे सहाबियत" यानि सोहबत हासिल करना। जो हुजूर (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की सोहबत में रहे वो सहाबी हुए। आलातरीन निसबत के एतबार से सहाबी अपने आप में अकेले हैं जिन्हें हुजूर (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की कुरबत नसीब हुई, यहां ग़ैर की समाई नहीं। तसव्वुफ़ में सूफीयों ने इसी इरादत को 'मुरीदी' का नाम दिया है। मुरीदी का मफ़हूम भी यही है कि जिस मुर्शिद कामिल से लगाव व ताल्लुक़ पैदा हो जाए और सच्चे दिल से उनकी तरफ़ माएल हो जाए तो उनकी ख़िदमत में आख़िरत सवांरने के लिए इताअत व नियाजमंदी के साथ फ़रमाबरदार हो जाए। ये हुक्मे खुदा की ऐन तामील है–

ऐ ईमानवालों खुदा से डरो और सच्चों के साथ रहा करो।

(कुरआन–9.सूरे तौबा–119)

इस आयात में तीन बातें कही गयी हैं एक ईमान–बिल्लाह, दुसरा तकवा–अल्लाह और तीसरा सोहबत–औलियाअल्लाह। सबसे पहले ईमान के बारे में कहा गया है कि ईमान को अव्वलियत हासिल है। फिर तकवा के बारे में कहा गया है। तकवा की जामे तारीफ में सूफ़ियों ने कहा कि– **'खुदा तुझे उस जगह न देखे जहां जाने से तूझे रोका है और उस जगह से कभी गैर हाजिर न पाए जहां जाने का हुक्म दिया है।'** फिर कहा गया कि सिर्फ हुसूले ईमान और वसूले तक़वा व तहारत ही काफी नहीं है बल्कि इसके बाद भी एक मरतबा है जिसे एहसान की तकमील कहते हैं, जो शैख़ की सोहबत से हासिल होता है।

तू नफ़्स की तमन्ना पूरी करने में लगा है और वो तुझे बरबाद करने में लगा है। (ग़ौसपाक अब्दुल क़ादिर जिलानी (अलैहि रहमान))

यहां सबसे ज्यादा गौर करने वाली बात ये है कि अल्लाह ईमानवालों से बात कर रहा है। ये नहीं फ़रमा रहा कि सच्चों के साथ हो जाओ और ईमान ले आओ, बल्कि ये फ़रमा रहा है कि ईमान लाने के बाद भी अल्लाह से डरना और सच्चों की सोहबत ज़रूरी है।

हाजी इमदादुल्ला शाह महाजर मक्की अलैहि रहमान और इमाम ग़ज़ाली अलैहि रहमान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं– शैख़ अपने हल्कए मुरीदैन में इस तरह होता है, जिस तरह नबी अपनी उम्मत में होता है।

(तसफिया–तुल–कुलूबः4) (इहयाउल उलूम)

हज़रत अबुतालिब मक्की अलैहि रहमान फरमाते हैं कि बुज़ुरगाने दीन ने फ़रमाया – 'जो नबी के साथ बैठना चाहे उसे चाहिए अहले तसव्वुफ़ की मजलिस व सोहबत इख़्तियार करे। जिस तरह वहां नबी की सोहबत जरूरी है यहां भी इस के लिए शेख़ का होना जरूरी है। अगर शैखे कामिल की नज़र में हो और हर अमल फ़रमान के मुताबिक करे और अपने तमाम इख़्तियार व इरादों को अपने शेख़ के दस्ते इख़्तियार में दे दे तो बहुत जल्द मंजिले मकसूद व मकबूलियत हासिल होगी।' (कुतुल कुलूब)

गौसे आज़म अब्दुल क़ादिर जिलानी अलैहि रहमान फ़रमाते हैं– 'बेशक हक़ीक़त यही है कि अल्लाह की आदते जारिया है कि ज़मीन पर शैख़ भी हो और मुरीद भी, हाकिम भी हो और महकूम भी, ताबेअ भी हो और मतबूअ भी (इन्सान इस बात पर पुख्ता यक़ीन रखे) कि ये सिलसिला आदम अलैहिस्सलाम से क़यामत तक के लिए है'।

(गुनियातुत तालेबीनः840)

शाह वलीउल्लाह मोहद्दिस देहलवी अलैहि रहमान फ़रमाते हैं– 'ज़ाहिरी तौर पर बिना मां–बाप के बच्चा नहीं हो सकता, ठीक उसी तरह बातिनी में बिना पीर के अल्लाह की राह मुश्किल है।' और फरमाते हैं – **'जिसका कोई पीर नहीं उसका पीर, शैतान है।'** (अलइन्तेबाहः33)

'हर मुरीद ये यकीन रखे कि बेशक तुम्हारा पीरे कामिल ही वो है जो अल्लाह से मिलाता है। तुम्हारा ताल्लुक अपने ही पीर के साथ पक्का हो, किसी दुसरे की तरफ न हो।'

शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी अलैहि रहमान फ़रमाते हैं–'अपने पीर से मदद मांगना, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मदद मांगना है, क्योंकि ये उनके नाएब और जानशीन हैं। इस अक़ीदे को पूरे यक़ीन से अपने पल्लु बांध लो।'

हक़ीक़ी निजात के लिए अपने इबादत व मुजाहिदे से पहले मुर्शिद ज़रूरी है और सुनन्त–अल्लाह भी इसी तर्ज़ पर जारी है। इसी रहबरी में कामयाबी है।

...Next **बैअत होना**...

कुरान में बैअत की अहमियत

बैअत की अहमियत के बारे में कुरान में है–

'ऐ ईमानवालों! तुम अल्लाह से डरते रहो और उस तक पहुंचने का वसीला तलाश करो और उसकी राह में जिहाद करो ताकि तुम फलाहो कामयाब हो जाओ' (कुरान–5:35)

इस आयत में पूरा तसव्वुफ़ ही सिमट आया है, यहां फलाहो कामयाबी के लिए चार बातें कही गयी हैं–

ईमान– ज़ुबान से इकरार करना और दिल से तस्दीक़ करना कि अल्लाह एक है और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

तक़्वा– अल्लाह ने जिस काम का हुक्म दिया उसे करना और जिस से मना किया है उस से परहेज़ करना।

वसीला– अल्लाह के नेक बंदों की सोहबत इख़्तियार करना और उनसे रहबरी हासिल करना।

जिहाद– अपने नफ़्स और अना (मैं) को अल्लाह की राह में मिटा देना।

एडवर्टाइज़मेंट या आर्टिकल्स के लिए संपर्क करें।
सूफ़ीयाना पत्रिका
दरगाह के पास, केलाबाड़ी,
दुर्ग (छत्तीसगढ़) 491001
या 8878 335522 पर SMS करें,
या www.sufiyana@gmail.com पर Email करें।

www.sufiyana.com

किरपा करो सरकार...

–खालिद महमूद 'खालिद'

मैं मली, तन मेरा मैला, किरपा करो सरकार।
नज़रे करम सरकार, या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ...
सरपे उठाकर पाप की गठरी, आई हूं तुम्हरे द्वार।
नज़रे करम सरकार, या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ...

मेरे खिवइया बीच भंवर में, कश्ती डूब न जाए।
तेरा हूं, तू मेरी खबर ले, कौन लगाए पार।
नज़रे करम सरकार, या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ...

मुझ मंगते की बात ही क्या है, वो हैं बड़े लजपाल।
उनकी किरपा और दया से, पलता है सब संसार।
नज़रे करम सरकार, या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ...

उनकी अता के गुन गाओ, उनसे ही फरियाद करो।
सबसे बड़े दाता हैं वो, सबसे बड़ी सरकार।
नज़रे करम सरकार, या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ...

उनकी याद ईमान बना लो, खुद को ही कुरान बना लो।
उनकी याद से मिट जाते हैं, सारे ही आज़ार।
नज़रे करम सरकार, या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ...

उसके लिए तो सरमाया है, प्यारे मदिने वाले का।
सोचें समझें कहने वाले, 'खालिद' को नादार।
नज़रे करम सरकार, या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ...

आज़ार=बीमार, सरमाया=असल दौलत, नादार=गरीब

www.sufiyana.com

महफिले सिमा और रक्स के बारे में बुजूर्गों का क़ौल...

महफ़िले सिमा

क़ालल अशरफ़ः

अस्सिमाअ़ तवाजिद उस सूफ़िया फ़ि तफ़हिमुल मआनी अल्लज़ी यतसव्वूर मन अला सवात अल मुख़्तलेफ़ा

हज़रत सैय्यद मख़्दूम अशरफ़ सिमनानी अलैहि रहमान, लताएफ अशरफ़ी में फ़रमाते हैं कि मुख़्तलिफ़ आवाज़ों को सुनकर फ़हम में जो मआ़नी पैदा होती हैं, उनके असर से सूफ़ियों का वज्द करना सिमा है।

सुल्तानुल मशाएख़ फ़रमाते हैं कि जब तक ये इल्म न हो जाए कि सिमा क्या है और सुनने वाला कौन है, तब तक सिमा न हराम है न हलाल है।

सिमा इ बिरादर बगोयम के चिस्त
अगर उसतमा रा बदानम के किस्त

मैं इसी वक्त बता सकता हूं कि सिमा क्या है जबकि मुझे ये मालूम हो जाए कि सुननेवाला कौन है।

आगे फ़रमाते हैं कि जिस मसले में हिल्लत व हुरमत मुख़्तलिफ़ फ़िया हो उसमें दिलेराना और बेबाकाना गुफ़्तगू नहीं करना चाहिए, बल्कि ग़ौरो तातिल के बाद इस सिलसिले में बात करना चाहिए। ऐसे ही मुख़्तलिफ़ फ़िया मसला है, महफ़िले सिमा। इसको न तो मुतलक़न हराम कहा जा सकता है और न बग़ैर क़ैद के हलाल कहा जा सकता है।

ऐ दुनिया के तालिब!
ऐ दरवेशों की
बज़्मे सिमा के मुन्किर!
अगर सिमा
तेरे लिए हराम है
तो हराम ही रहे।

www.sufiyana.com

सिमा, खुदा के छिपे हुए भेदों में एक भेद है और उसके नूर में से एक नूर है। वही खुशनसीब व नेक है, जिसका दिल सिमा का आफ़ताब बन जाए यानी सिमा का हक़ीक़ी ज़ौक़ व शौक़ हो।

इश्क़ दर परदा मी नवाज़द साज
आशिक़ी को के बशनूद आवाज़
हमा आलम सदाए नग़मए उस्त
के शनेद इब्न चुनैन सदाए दराज़

इश्क़ ने दरपरदा साज़ छेड़ रखा है, वो आशिक़ कहां है जो इस आवाज़ को सुनें। ये तमाम कायनात इसी नग़मए 'कुन' की आवाज़ है, किसी ने इतनी लंबी तान कभी सुनी है।

तालिब और इसके राज़ को जानने वाले आलिम को चाहिए कि सिमा की तरफ तवज्जो करें। सिमा की तारिफ़ बुज़ुर्गाने दीन ने इस तरह की है – "बेशक सिमा एक अमरे मख़्फ़ी, एक नूरे जली और सिर्रुन अलियुन है। इस राज़ से वही आगाह हो सकते हैं, जो अहले तहक़ीक़ हैं और इल्म में मज़बूत हैं और अल्लाहवाले हैं। साहिबाने मारेफत हैं, हक़ से जुड़े हुए हैं और खुदा के साथ हैं। जिनके लिए इब्तेदा में ज़ौक़ है और इन्तहा में शुरब है।"

सिमा ऐसी पाकीज़ा और मौजून आवाज़ को कहते हैं जिसको समझा जा सके और दिलों को हरकत में लाने वाली हो।

मतरब बराह परदा दरासाजे उदरा
दर दा बगोश होश दर्दो सरूद रा
अज़ नग़मए सरूद के गोयन्द फ़ैज़ उस्त
दरपर्दाए सिमा दरआवर हसूद रा

ऐ मतरब साज़े ओर को परदा के रास्ते से अन्दर ले आ और दर्दो सोज़ की मौसिक़ी को गोशए होश से सुन। नग़माए मौसिक़ी को इसका फ़ैज़ कहते हैं, सिमा के परदे में इसे हासिदीन ले आए हैं।

और कुछ लोग वो हैं जो सिमा से मअज़ दिल कर दिए गए हैं। *"वो सुनने की जगह से दूर कर दिए गए हैं"* (कुरान 26:212)। अगर अल्लाह उनमें खूबी पाता तो उन को ज़रूर सुनाता अगर उनको सुनवा भी दिया जाता, तब भी वो पीठ फेर लेते। ये वही लोग हैं जो 'अरबाबे सिमा' के मुन्किर हैं, इनमें कुछ तो सिमा को फासिक़ कहते हैं और कुछ कुफ्र का फतवा भी लगा देते हैं, और कुछ लोग इन्हें बिदअती भी कहते हैं। बहरहाल उनके दर्मियान असहाबे सिमा पर फतवों और इल्ज़ामात पर एक राय नहीं है।

रव्वाह रवलक़ी गबररव्वान वरव्वाह तरसा रव्वाहमुग़
सज्दागाहे क़िब्लए अबो बतो नतवान गुज़ाश्त
अज़ हमा दरबगुज़रम नगज़ारमश मारा बाव
अज़ जहान बतवान गुज़शतन रूई तू नतवान गुज़ाश्त

लोग मुझे गबर बहे ख्वाह तरसा ख्वाह मुग़ कहे, कुछ भी कहे, मैं तेरे क़िब्ल ए अबरू को, जो मेरी सज्दागाह है, नहीं छोड़ सकता। मैं सब को छोड़ दूंगा और सब से मुंह फेर लूंगा। दुनिया को भी तर्क कर दूंगा, लेकिन तुझे नहीं छोड़ सकता।

सिमा के बारे में आसारे पाक और अक़वाले सहीहिया ये हैं कि सिमा नफ़्सुल अम्र में मुबाह है। सिमा की तारीफ ये है कि

अरसिमा सूत तय्येबा मौजून
मफ़्हूमुलमअनी महरकुल कुलूब

सिमा ऐसी पाकीज़ा और मौजून आवाज़ को कहते हैं जिसको समझा जा सके और दिलों को हरकत में लाने वाली हो।

पस इसके अन्दर कोई वजहए हुरमत नहीं है। 'हराम' वो चीज़ है जिसका तर्क दलील क़तई से साबित हो चुका हो और जिसके सबूते तर्क में कोई शको शुब्ह न हो और हमने सिमा की जो तारीफ बयान की है उस में कोई ऐसी चीज़ नहीं है। जो लोग दरवेशों की बज़्मे सिमा के मुन्किर हैं और महफिले सिमा से इन्कार करते हैं उनके लिए ये रूबाई

दुनिया तलब जहान बकामत बादा
दाइन जेफए मुरदार ब दामत बादा
गुफ्ती के ब नज़्द मन हराम अस्त सिमा
गर बर तू हराम अस्त हरामत बादा

ऐ दुनिया के तालिब! ये दुनिया तुझे मुबारक हो, ये तो एक मुरदार है, ये मुरदार तेरे दाम ही में रहे। अच्छा है तू कहता है कि सिमा मेरे लिए हराम है। अगर ये तुझ पर हराम है तो हराम ही रहे।

...जारी है... **सिमा के जवाज़ में आयाते कुरानी...**

www.sufiyana.com

रिजालुल्लाह

यहां हम खुदा के उन खास बंदों के बारे में बात करेंगे जिन्हें रिजालुल्लाह या रिजालुल ग़ैब कहा जाता है। इन्हीं में से कुतूब अब्दाल होते हैं।

रब के ख़ास बंदे

भाग–1

वो न तो पहचाने जा सकते हैं और न ही उनके बारे में बयान किया जा सकता है, जबकि वो आम इन्सानों की शक्ल में ही रहते हैं और आम लोगों की तरह ही काम में मसरूफ़ रहते हैं।

इन्सानी मुआशरे (समाज) को एक बेहतर और अच्छी जिंदगी देने के लिए खुदा के कुछ खास बंदे हर दौर में रहे हैं। उन्होंने हमेशा इन्सान की इस्लाह और फ़लाह के लिए काम किया। मौलाना रूमी अलैहिर्रहमान फ़रमाते हैं कि **खामोशी अल्लाह की आवाज़ है।** इसी खामोशी से ये खास बंदे अपना काम करते हैं। ये कभी अपने काम से ग़ाफ़िल नहीं रहते। इनके हाथों कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचा। इन खास बंदों को रिजालुल्लाह या मर्दाने खुदा या मर्दाने हक़ कहते हैं। इनके लिए कुरान में आया है–

वो मर्दाने खुदा जिन्हें तिजारत और खरीद फरोख्त, यादे खुदा से ग़ाफ़िल नहीं करती।

(कुरान:24:37)

इनका वजूद हज़रत आदम अलैहिर्रहमान से लेकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तक और उनसे लेकर ताकयामत रहेगा। कायनात का क़याम व निज़ाम का दारोमदार इन्हीं मर्दाने खुदा पर है। रब और बंदे के दर्मियान का रिश्ता इन्हीं की तालिमात व हिदायत पर क़ायम है। इन्हीं की बरकत से बारिश होती है, पेड़ पौधे हरे होते हैं। कायनात के किस्म किस्म के जीवों की जिंदगी इन्हीं की निगाहे करम की एहसानमंद है। शहरी व गांव की जिंदगी, बादशाहों का जीतना हारना, सुलह व लड़ाइयां, अमीरी व ग़रीबी के हालात, अच्छाइयां व बुराईयां, गरज़ कि **अल्लाह की दी हुई करोड़ों ताकतों का मुज़ाहेरा इन्हीं के इख़्तियार में है।** अल्लाह अपने ग़ैबुल ग़ैब से इनको नूर अता करता है, जिससे ये लोगों की इस्लाह करते रहते हैं।

ये आम लोगों में भी रहते हैं,

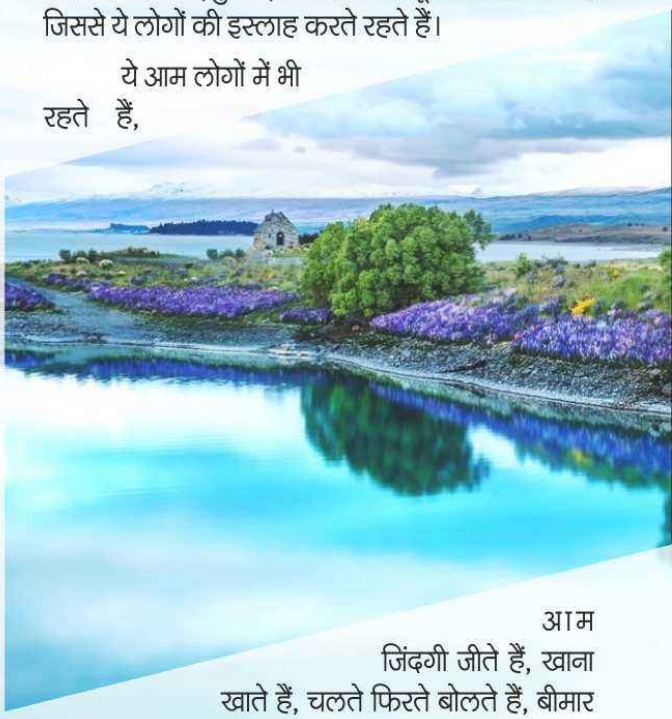

आम जिंदगी जीते हैं, खाना खाते हैं, चलते फिरते बोलते हैं, बीमार होते हैं, इलाज कराते हैं, शादी करते हैं, रिश्तेदारी निभाते हैं, लेन देन करते हैं, हत्ता कि जिंदगी के सारे जायज़ काम में हिस्सा लेते हैं। ये न पहचाने जा सकते हैं न ही उनकी ताकत बयान की जा सकती है, जबकि ये आम लोगों के दर्मियान होते हैं। लेकिन जब लोग दुनियादारी में डूबे रहते

www.sufiyana.com

हैं तो ये खुदा की याद में मश्गूल रहते हैं। और खुदा के हुक्म से हर काम को अन्जाम देते हैं। लोग इनको बुरी नीयत से या हसद से नुकसान पहुचाने की कोशिश करते हैं तो ये अपने विलायत की ताकत से बच जाते हैं। इनकी खासियत लोगों से छिपी हुई होती है। इनमें से कोई पहाड़ों विरानों पर रहता है तो कोई आबादी में रहते हैं।

चन्द लम्हों में ये दूसरे देश तक का सफ़र तय कर सकते हैं। पानी पर चल सकते हैं। जब चाहें तब गायब हो सकते हैं। जिसकी चाहें सूरत इख़्तियार कर सकते हैं। ग़ैब की ख़बर रखते हैं। **छोटी सी जगह में हज़ारों की तादाद में इकट्ठा हो सकते हैं। महफ़िले सिमा में रक़्स करते हैं** और किसी को नज़र नहीं आते। रोते हैं गिरयावोजारी करते हैं लेकिन किसी को सुनाई नहीं देता। पत्थर को सोना बना सकते हैं।

इनके पास खुदा की दी हुई असीम ताकत होती है लेकिन ये खुद के लिए इस्तेमाल नहीं करते। जैसा अल्लाह का हुक्म होता है वैसा करते हैं। लोगों की परेशानियां दूर करते हैं। लोगों की मदद करते हैं।

रिजालुल्लाह अपने वक्त के नबी के उम्मती होते हैं और उन्हीं का कलमा पढ़ते हैं। इन्हीं के बारे में **हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि– मेरे वली मेरे क़बा के नीचे होते हैं और मेरे अलावा उन्हें कोई नहीं पहचानता। यानी आम लोगों इनको नहीं जानते।**

दुनिया के सारे रिजालुल्लाह साल में दो बार आपस में मुलाकात करते हैं, एक बार आराफात के मैदान में और दुसरी बार रजब के महिने में किसी ऐसी जगह जहां रब का हुक्म होता है।

अल्लाह ने दुनिया को इन खास औलिया के क़ब्ज़े में दे दिया है, यहां तक कि ये तन्हा रब के काम के लिए वक़्फ़ हो गए हैं।

मख्दुम अशरफ सिमनानी अलैहि रहमान फरमाते हैं– **अल्लाह ने कुछ औलिया को बाक़ी का सरदार बनाया है और मख्लूक की इस्लाह व हाजत रवाई का काम इनके सुपुर्द किया है।** ये हज़रात अपने काम को करते हैं, इसके लिए एक दुसरे की मदद भी लेते हैं। ये रब के काम से कभी ग़ाफ़िल नहीं होते।

इनके बारह ओहदे (या क़िस्में) होते हैं–
1.कुतुब, 2.ग़ौस, 3.अमामा, 4.अवताद,
5.अब्दाल, 6.अख्यार, 7.अबरार, 8.नक़बा,
9.नजबा, 10.उमदा, 11.मक्तूमान, 12.मफ़रदान।

...जारी है...

www.sufiyana.com

कशफुल मेहजूब, तसव्वुफ़ की सबसे मशहूर किताब है। दाता गंजबख्श अली हजवेरी अलैहि रहमान की इस तसनिफ़ ने हमेशा से सूफ़ियों की रहनुमाई की है और बहुत से भटके हुओं को ईमान की राह दिखाई है।

ह. अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. और तसव्वुफ़

जिसका दिल फ़ानी (नश्वर) से जुड़ा होता है, उसके मिटने से वो भी मिट जाता है। लेकिन जिसका दिल रब (ईश्वर) से जुड़ा होता है, वो नफ़्स को मिटाकर अपने रब के साथ बाक़ी रह जाता है।

और (खुदाए) रहमान के ख़ास बन्दे तो वह हैं जो ज़मीन पर अख्लाक व इन्केसारी के साथ चलते हैं और जब जाहिल उनसे (जिहालत की) बात करते हैं तो वो उनको सलाम करते हैं। (कुरान25:63)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि

जो सूफ़ियों की आवाज़ सुने और उनकी दुआ पर आमीन न कहे तो वो अल्लाह के नज़दीक ग़ाफ़िलों में शुमार होगा।

कशफुल महजुब में हज़रत दाता गंजबख्श अली हजवेरी अलैहि रहमान फ़रमाते हैं कि अगर तुम सूफ़ी बनना चाहते हो तो जान लो कि सूफ़ी होना हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ अलैहि रहमान की सिफ़त है। सफ़ाए बातिन के लिए कुछ उसूल और फ़रोअ हैं। एक असल तो ये है दिल को ग़ैर-अल्लाह से खाली करे और फ़रोअ ये है कि मकरो फरेब से भरपूर दुनिया से दिल को खाली कर दे। ये दोनों सिफ़तें अबुबक्र सिद्दीक़ अलैहि रहमान की हैं। इसलिए आप तरीक़त के रहनुमाओं के इमाम हैं।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के विसाल के बाद जब तमाम सहाबा बारगाहे मुअल्ला में दिल शिकस्ता होकर जमा हुए तो हज़रत उमर फारूक़ अलैहि रहमान अपनी तलवार निकाल कर खड़े हो गये और फ़रमाने लगे कि जिसने भी ये कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इन्तेकाल हो गया है, मैं उसका सर कलम कर दूंगा। ऐसे वक्त में अबुबक्र सिद्दीक़ अलैहि रहमान तशरीफ लाए और बुलन्द आवाज़ में खुत्बा दिया कि – "खबरदार,जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की परसतिश करता था, वो जान ले कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का विसाल हो चुका है और जो उनके रब की इबादत करता है तो वो आगाह हो कि वो ज़िन्दा है, उसे मौत नहीं है।"

फिर कुरान की आयत तिलावत फ़रमाई–

(फिर लड़ाई से जी क्यों चुराते हो) और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तो सिर्फ रसूल हैं, उनसे पहले कई पैग़म्बर गुज़र चुके हैं। फिर क्या अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का विसाल हो जाए या शहीद कर दिये जाएं तो तुम उलटे पॉव (कुफ्र की तरफ़) पलट जाओगे। और (ये जान लो कि) जो उलटे पांव फिरेगा तो हरगिज़ खुदा का कुछ भी नहीं बिगड़ेगा और जल्द ही खुदा शुक्र करने वालों को अच्छा बदला देगा

(कुरान 3:144)

मतलब ये था कि अगर कोई ये समझे बैठा था कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मअबूद थे तो जान ले कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का विसाल हो चुका है और अगर वो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रब की इबादत करता था तो वो ज़िन्दा है हरगिज़ उस पर मौत नहीं आनी है। हकीकत ये है कि जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बशरीयत की आंख से देखा (और आपको अपने जैसा आम इन्सान समझा) तो जब आप दुनिया से तशरीफ ले जाएंगे तो आपकी वो ताज़ीम जो उसके दिल में है जाती रहेगी और जिसने आप को हक़ीक़त की आंख से देखा तो उसके लिए आपका तशरीफ़ ले जाना व मौजूद रहना, दोनों बराबर है।

जिसने मख़लूक़ पर नज़र डाली वो हलाक हुआ और जिसने हक की तरफ रूजूअ किया वो मालिक हुआ।

...Next मसलके दाता गंजबख्श...

www.sufiyana.com

पाकी

'उसमें वो लोग हैं जो ख़ूब पाक होना चाहते हैं और पाक (साफ सूथरे) लोग अल्लाह को प्यारे हैं।' (कुरान 9:108)
'अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कुछ तंगी रखे, हां ये चाहता है कि तुम्हें साफ सूथरा (पाक) कर दे।' (कुरान 5:6)
'पाकीज़गी आधा ईमान है।' (तिरमिज़ी 3530)
'दीन की बुनियाद पाकीज़गी पर है।' (अश-शिफा 1:61, इहयाउल उलूम 396)

पाकी के मायने हैं- खुद को बुराईयों और गंदगी से पाक रखना। पाकी दो तरह की होती है- एक ज़ाहिरी और दूसरा बातिनी। दोनों पाकी ज़रूरी है। बातिनी यानी दिल की पाकी भी और ज़ाहिरी यानी जिस्म की पाकी भी। किसी भी तरह की इबादत व अमल के लिए जिस्म का पाक होना ज़रूरी होता है। साथ जगह और कपड़े भी पाक हो।

गुस्ल

पाकी हासिल करने के लिए गुस्ल करना पड़ता है। गुस्ल करना और सिर्फ नहाने में फ़र्क होता है। गुस्ल करने का ये तरीक़ा है-

- ☒ गुस्ल करने की नियत करें
- ☒ गंदगी से तमाम जिस्म को पाक कर लें
- ☒ वजू करें
- ☒ कुल्ली करें व अच्छी तरह मुंह साफ करें
- ☒ नाक में पानी डालें
- ☒ पूरे बदन में तीन बार पानी बहाएं, इस तरह कि कोई हिस्सा बाकी न रहे

साफ व पाक कपड़े पहनें।

वजू

गुस्ल करने से पाक तो हो जाते हैं, लेकिन किसी भी इबादत व अमल के लिए या कुरान की तिलावत के लिए या मज़ार में हाजिरी के लिए या पीर की सोहबत के लिए सिर्फ पाक होना काफ़ी नहीं है। इसके लिए वजू करना भी जरूरी है। बल्कि कोशिश करें कि हमेशा ही वजू से रहें। वजू का ये तरीक़ा है-

- ☒ खुदा की खुशनूदी व आखिरत के अजर के साथ वजू की नीयत करें
- ☒ बिस्मिल्लाह पढ़ कर गट्टो सहित हाथ धोएं
- ☒ तीन बार कुल्ली करके मुंह साफ करें, (जरूरत पड़े तो मिसवाक करें)
- ☒ तीन बार नाक में पानी डालें
- ☒ तीन बार पूरा चेहरा अच्छी तरह धोएं (दाढ़ी में खिलाल करें)
- ☒ तीन बार हाथों कोहनी समेत अच्छी तरह धोएं (उंगलियों में खिलाल करें)
- ☒ पूरे सर का और गर्दन व कान का मसा करें
- ☒ पैर के पंजों को टखनों समेत अच्छी तरह धोएं

गुस्ल नहीं रहता

कुछ बातों से गुस्ल नहीं रहता (टूट जाता है)। जैसे- जिस्म में सिक्के के बराबर गंदगी (नजासत) लगने, मनी निकलने, शहवत/सोहबत, हैज व निफास वगैरह से।

वजू नहीं रहता

कुछ बातों से वजू नहीं रहता (टूट जाता है) और फिर से वजू बनाना जरूरी हो जाता है। वो बातें जिससे गुस्ल टूट जाता है, उससे वजू भी टूट जाता है।

कुछ बातें ऐसी हैं जिससे वजू तो टूट जाता है लेकिन गुस्ल नहीं टूटता। जैसे- हवा खारिज होने से, पेशाब या गंदे पानी के छिंटे से, खून या मवाद निकलने से, उल्टी होने से, चीत या पट लेटने से, नशा चढ़ने से, बेहोश होने से वगैरह वगैरह।

वजू पर वजू करना अच्छी बात है। नए काम के लिए फिर से ताजा वजू करना अच्छा है।

www.sufiyana.com

लिबास

ऐ इन्सान! हमने तुम्हें ऐसा लिबास दिया है जिससे तुम खुद को ढको और खुबसूरत दिखो। (लेकिन इसके साथ ही तुम्हें छुपा हुआ लिबास भी दिया है और वही) तक़्वा (परहेज़गारी) का लिबास ही बेहतर है।... (कुरान 7:26)

अक्सर हम किसी इन्सान को उसके हुलिए उसके लिबास से पहनावे से पहचानते हैं और ये सोचते हैं कि वो वैसा ही होगा। हम पहले से तय कर लेते हैं कि फटे कपड़े पहना होगा तो ग़रीब होगा, अच्छे कपड़े पहना होगा तो अमीर होगा, धोती पहना होगा तो पंडित होगा, सर में साफ़ा पहना होगा तो मौलाना होगा, सफेद कुर्ता पायजामा पहना होगा तो नेता होगा वगैरह वगैरह।

आप भी इससे बच नहीं सकते, आपको भी कोई आपके लिबास की वजह से पहचानता होगा, तो क्या वो आपके बारे में अच्छी तरह जान पाएगा, क्या वो जान पाएगा कि आपमें क्या खूबियां हैं और क्या बुराईयां हैं। हो सकता है इसी वजह से आप अपने बाप दादाओं की तरह कपड़े पहनना छोड़ दिए हों। अपने बुजूर्गों के पहनावे को सिर्फ इसलिए छोड़ देना कि 'लोग क्या कहेंगे?', बहुत बड़ी नादानी और शर्म की बात है। इन्सान की पहचान उसके दिल से, उसके अख़्लाक़ व किरदार से होती है।

मिस्र में एक सूफ़ी हज़रत ज़ुन्नुन मिस्री अलैहि रहमान रहते थे। एक नौजवान ने उनसे पूछा, मुझे समझ में नहीं आता कि आप लोग सिर्फ एक चोगा ही क्यों पहने रहते हैं? बदलते वक़्त के साथ यह ज़रूरी है कि लोग ऐसे लिबास पहने जिनसे उनकी शख़्सियत सबसे अलग दिखे और देखने वाले वाहवाही करें। ज़ुन्नुन मुस्कुराए और अपनी उंगली से एक अंगूठी निकालकर बोले, 'बेटे, मैं तुम्हारे सवाल का जवाब ज़रूर दूंगा लेकिन पहले तुम इस अंगूठी को सामने बाज़ार में एक अशर्फी में बेच आओ'। नौजवान ने ज़ुन्नुन की साधारण सी दिखने वाली अंगूठी को देखकर कहा 'इसके लिए सोने की एक अशर्फी तो क्या कोई चांदी का एक सिक्का भी न दे'।

'कोशिश करके देखो, शायद तुम्हें वाकई कोई ख़रीदार मिल जाए' ज़ुन्नुन ने कहा। नौजवान तुरंत ही बाज़ार को रवाना हो गया। उसने वह अंगूठी बहुत से सौदागरों, परचूनियों, साहूकारों, यहां तक कि हज्जाम और क़साई को भी दिखाई पर उनमें से कोई भी उस अंगूठी के लिए एक अशर्फी देने को तैयार नहीं हुआ। थक हार कर वो वापस आया और कहा, 'कोई भी इसके लिए चांदी के एक सिक्के से ज्यादा देने के लिए तैयार नहीं है'।

ज़ुन्नुन मुस्कुराए और कहा, 'अब तुम इस सड़क के पीछे सुनार की दुकान पर जाकर उसे यह अंगूठी दिखाओ। लेकिन तुम उसे अपना मोल मत बताना, बस यही देखना कि वह इसकी क्या क़ीमत लगाता है'। नौजवान बताई गयी दुकान तक गया और वहां से लौटते वक़्त उसके चेहरे से कुछ और ही बयान हो रहा था। उसने ज़ुन्नुन से कहा, आप सही थे। बाज़ार में किसी को भी इस अंगूठी की सही क़ीमत का अंदाजा नहीं है। सुनार ने इस अंगूठी के लिए सोने की एक हज़ार अशर्फियों की पेशकश की है। यह तो आपकी मांगी क़ीमत से भी हज़ार गुना है।

ज़ुन्नुन ने मुस्कुराते हुए कहा, 'और वही तुम्हारे सवाल का जवाब है। किसी भी इन्सान की क़ीमत उसके लिबास से नहीं आंको, नहीं तो तुम बाज़ार के उन सौदागरों की मानिंद बेशक़ीमती नगीनों से हाथ धो बैठोगे। अगर तुम उस सुनार की आंखों से चीज़ों को परखोगे तो तुम्हें मिट्टी और पत्थरों में भी सोना और जवाहरात दिखाई देंगे। इसके लिए तुम्हें दुनियावी नज़र पर पर्दा डालना होगा और दिल की निगाह से देखने की कोशिश करनी होगी। बाहरी दिखावे से हट कर देखो, तुम्हें हर तरफ हीरे-मोती ही नज़र आएंगे'।

www.sufiyana.com

डिसिप्लिन

डिसिप्लिन मतलब वक़्त की पाबंदी, अनुशासन। अपने मक़सद में लगन लगाए रखना। एक चीज़ को दूसरी बड़ी चीज के लिए छोड़ देना। बाद की ज्यादा बड़ी खुशी के लिए आज की छोटी खुशी को क़ुरबान कर देना।

ज़ाहिरी तौर पर इसमें मजबूरी दिखाई देती है कि करना ही पड़ेगा। बिना किये काम नहीं चलेगा। लेकिन असल आज़ादी इसी में होती है। जैसे लिखना पढ़ना हमारी एक खूबी है, इसके बग़ैर जिंदगी को हम सोच भी नहीं सकते। लेकिन अगर बचपन में अनुशासित होकर इसे नहीं सीखते तो क्या लिख पढ़ पाते। इसी लिखने पढ़ने की आज़ादी के लिए ही हमने घूमना फिरना खेलना कूदना छोड़ दिया था।

जो डिसिप्लिन में नहीं रहते वो दरअसल आज़ादी को नहीं जानते। वो छोटी छोटी खुशियों में ही खोए रहते हैं, बड़ी खुशियां तो उन्हें मालूम ही नहीं। वो खुशी के बारे में उसी तरह जानते हैं जिस तरह अंधा रंगों के बारे में जानता है।

कारण तो हमेशा रहते हैं, बहाना कभी नहीं रहता। फिर भी वो अक्सर बहाने बनाने में अपना वक्त जाया करते रहते हैं। ऐसे लोग अक्सर नाकामयाब होते हैं। ऐसे लोग जिन कामों को बहाना बना कर छोड़ देते हैं अक्सर कामयाब लोग उसी काम को करके कामयाब होते हैं। चाहे पसंद हो या नापसंद हो।

सबसे पहले अपने मक़सद को पहचाने फिर उसे हासिल करने में लग जाएं। परेशानी आ सकती है लेकिन नाउम्मीद न हो। इसे इस तरह पकड़े रहें कि इसके लिए बाक़ी सब छोड़ दें। चाहे आपकी पसंद का हो या न हो। इसमें कोई दो राय नहीं कि कामयाबी हर किसी को पसंद होती है और डिसिप्लिन में ही कामयाबी छुपी हुई है।

शेख सादी अलैहि रहमान फरमाते हैं-

'धीरे धीरे ही सही, लेकिन डिसिप्लिन व लगन से लगातार चलने वाले की कामयाबी तय है।'

लगातार गिरता पानी, पत्थर को भी चीर देता है।

www.sufiyana.com

लकड़हारा और कौवा

एक गांव में एक ग़रीब लकड़हारा रहता था, वह हर रोज जंगल से लकड़ी काट कर लाता और उन्हें बेचकर अपना और अपने परिवार का पेट पालता था। लकड़हारा, था तो बहुत गरीब लेकिन ईमानदार, दयालु और अच्छे अख्लाक वाला इन्सान था। वह हमेशा दूसरों के काम आता और यहां तक कि बेज़बान जानवरों का भी खयाल रखता था।

एक दिन जंगल में लकड़ी काटते काटते थक गया तो एक छाया दार पेड़ के नीचे सुस्ताने लगा। तभी उसने देखा कि एक सांप पेड़ पर बने हुए घोंसले की ओर बढ़ रहा था, इस घोंसले में कौवे के बच्चे थे जो सांप के डर से चिल्ला रहे थे। बच्चों के मां बाप कौवे दाना चुगने कहीं दूर गए थे। लकड़हारे को उन बच्चों पर दया आ गयी, वो अपनी थकान भूल कर फ़ौरन उठ बैठा और कौवे के बच्चों को सांप से बचाने के लिये पेड़ पर चढ़ने लगा। सांप खतरा देखकर भागने लगा और घोंसले से दूर जाने लगा। उसी बीच कौवे भी लौट आए, लकड़हारे को पेड़ पर चढ़ा देखा तो वह समझे कि ज़रूर उसने बच्चों को मार दिया होगा। वह गुस्से में काओं काओं चिल्लाने लगे और लकड़हारे को चोंच मार मार कर अधमरा कर दिया। बेचारा लकड़हारा किसी तरह जान बचाकर नीचे उतरा और चैन की सांस ली।

लेकिन जब कव्वे अपने घोंसले में गए तो बच्चे वहां दुबके हुए बैठे थे, बच्चों ने मां बाप को सारी बात बता दी और उन्होंने देखा कि सांप पेड़ से उतर कर भाग रहा है। अब कौवों को अपनी गलती का एहसास हुआ। वे बहुत शर्मिन्दा हुए। कौवे लकड़हारे का शुक्रिया अदा करना चाहते थे, इसके लिए उन्होंने घोंसले में रखा मोती का क़ीमती हार जो उन्हें कुछ ही दिन पहले गांव के तालाब के किनारे मिला था, उठा कर लकड़हारे के आगे डाल दिया और थोड़ी दूर हटकर काओं काओं करने लगे। इस तरह कव्वे अपने प्यारे बच्चों की जान बचाने पर दयालु लकड़हारे को धन्यवाद कर रहे थे, ग़रीब लकड़हारा भी कीमती हार पाकर बहुत खुश हुआ और उसने मन ही मन में अल्लाह का शुक्र अदा किया।

जब लकड़हारा लकडियों का गट्ठर सिर पर उठा कर अपने गांव की ओर चलने लगा तो कव्वे भी उसके ऊपर कांव कांव करते उड़ रहे थे, लेकिन अब चोंच मारने के लिये नहीं बल्कि अलविदा कहने के लिये।

सबक़–

- ☑ हमें इंसानों के साथ साथ जानवरों और चिड़ियों पर भी रहम करना चाहिये और बुरे समय में उनके काम आना चाहिये।
- ☑ सही जानकारी हासिल किये बिना जल्दबाज़ी में कोई फैसला नहीं करना चाहिए।
- ☑ अपनी ग़ल्ती का एहसास हो जाने पर सामने वाले से माफ़ी मांग लेना चाहिए।
- ☑ अगर किसी ने हमारे साथ भलाई की, तो उसका शुक्रिया ज़रूर अदा करना

www.sufiyana.com

मनुष्य के प्रकार

परमहंस जी अपने शिष्यों के साथ टहल रहे थे। देखा कि एक मछुआरा जाल फेंककर मछली पकड़ रहा है। आप वहां ठहर गए और अपने शिष्यों से कहा कि ध्यान से इन मछलियों को देखो। कुछ मछलियां जाल में निश्चल पड़ी हैं, तो कुछ जाल से निकलने की कोशिश कर रही हैं लेकिन कामयाब नहीं हो पा रही हैं। कुछ उस जाल से निकलने में कामयाब हो गई और आज़ादी से घुमने लगी। लेकिन कुछ मछलियां तो जाल में फंसी ही नहीं।

जिस तरह मछलियां चार किस्म की होती है, ठीक उसी तरह मनुष्य भी चार तरह के होते हैं। एक मनुष्य वो जो अपनी इंद्रियों के जाल में फंस चुका है और हार मान चुका है। वो इससे निकलने की कोशिश भी नहीं करता। दूसरा मनुष्य वो जो इंद्रियों के जाल में फंसा तो है लेकिन उससे निकलने की कोशिश कर रहा। ये अलग बात है कि कामयाब नहीं हो पा रहा। तीसरा मनुष्य वो है, जो इंद्रियों के जाल में फंसा भी और उससे निकल भी गया। अब आज़ादी से अपने अस्ल की तरफ लौट आया है। चौथा मनुष्य वो है जो अपना अस्ल जानता है। वो ये भी जानता है कि इन इंद्रियों का जाल कितना भयावह है और इससे कैसे बचा जाए। वो इस जाल में फंसता ही नहीं और खुद को इससे हमेशा आज़ाद रखता है। इस तरह वो रब को पाने में अग्रसर है।

गुरू की ज़रूरत

एक संत से मिलने अक्सर देव आया करते थे। संत बड़े आदर से उनका इस्तेकबाल करते, उनके साथ बैठते, बातचीत करते। लेकिन जब देव चले जाते तो उनकी बैठी हुई मिट्टी को उठाकर दूर फिकवा देते थे।

ये बात जब देव को पता चली तो वो बहुत गुस्सा हुए और संत के पास पहुंचकर सवाल किया– 'ऐ संत! मैं कौन हूं, ये आप जानते हैं, मैं किनका पुत्र हूं, ये भी आप जानते हैं, मेरा ज्ञान और महिमा किसी से छुपी नहीं है। फिर मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यूं किया जा रहा है? पहले इतने अच्छे से मिला जा रहा है फिर मेरा इतना अपमान। ऐसा तो कोई दुश्मनों के साथ भी नहीं करता।'

संत ने कहा 'हे देव! आपसे अच्छे से मिलना तो मेरा व्यवहार है और आपके ज्ञान व शान में मुझे कोई शक नहीं है। लेकिन आपमें एक कमी भी है, वो ये कि आप किसी गुरू से नहीं जुड़े हैं। इसलिए मेरे लिए आपका ज्ञान व शान किसी काम की नहीं। बिना गुरू के वो छुत समान है। मैं नहीं चाहता कि जो गुरू से जुड़ा न हो उसका साया भी यहां की मिट्टी पर पड़े।'

ईश्वर कहां है?

संत नामदेव से एक जिज्ञासु प्रश्न किया–'गुरूदेव, कहा जाता है कि ईश्वर हर जगह मौजूद है, तो उसे अनुभव कैसे किया जा सकता है? क्या आप उसकी प्राप्ति का कोई उपाय बता सकते हैं?' नामदेव यह सुनकर मुस्कराए। फिर उन्होंने उसे एक लोटा पानी और थोड़ा सा नमक लाने को कहा। वहां उपस्थित शिष्यों की उत्सुकता बढ़ गई।

नमक और पानी के आ जाने पर संत ने नमक को पानी में छोड़ देने को कहा। जब नमक पानी में घुल गया तो संत ने पूछा– 'बताओ, क्या तुम्हें इसमें नमक दिख रहा है?' जिज्ञासु बोला– 'नहीं गुरूदेव, नमक तो इसमें पूरी तरह घुल–मिल गया है।' संत ने पानी चखने को कहा। उसने चखकर कहा– 'जी, इसमें नमक उपस्थित है, पर वह दिखाई नहीं दे रहा।' अब संत ने उसे जल उबालने को कहा। पूरा जल जब भाप बन गया तो संत ने पूछा– 'क्या इसमें वह दिखता है?' जिज्ञासु ने गौर से लोटे को देखा और कहा–'हां, अब इसमें नमक दिख रहा है।' तब संत ने समझाया–'जिस तरह नमक पानी में होते हुए भी दिखता नहीं, उसी तरह ईश्वर भी हर जगह अनुभव किया जा सकता है, मगर वह दिखता नहीं। जिस तरह जल को गर्म करके तुमने नमक पा लिया, उसी प्रकार तुम भी उचित तप और कर्म करके ईश्वर को प्राप्त कर सकते हो।'

दुनियादारी नाम है अल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाने का, लेकिन जीने की ज़रूरतें पूरी करना और घरवालों की परवरिश करना दुनियादारी नहीं है। (शेख सादी रहमान)

www.sufiyana.com

मुल्ला नसरूद्दीन

मुल्ला नसरूद्दीन एक ऐसा किरदार है, जो दुनिया में बहुत कम ही हुए हैं। कई देश मुल्ला नसरूद्दीन को पैदा करने का दावा करते है। कई जगह उसके किस्से इतने मशहुर हैं कि लोग अपनी लोककथा का हिस्सा मानते हैं। मध्ययुग में नसरूदीन के क़िस्सों का उपयोग तानाशाह अधिकारियों का मजाक उड़ाने के लिए किया जाता था। मुल्ला नसरूदीन सोवियत यूनियन का लोक नायक माना जाता है।

मुल्ला मध्यपूर्व और उसके आसपास बसने वाली मनुष्य जाति के सामूहिक अवचेतन का हिस्सा बन गया। कभी वह बहुत बुद्धू बनकर सामने आता है तो कभी बहुत बुद्धिमान। उसके पास कई रहस्यों के भंडार है। सूफी दरवेश उसका उपयोग मनुष्य के मन के अजीबो गरीब पहलुओं को उजागर करने के लिए किया करते हैं। विद्वानों की कलम की बहुत सी स्याही नसरूद्दीन को कागज पर उतारने पर खर्च हुई है।

मुल्ला नसरूदीन को ऐतिहासिक व्यक्ति मानने से कुछ हासिल नहीं होगा इसलिए उसे मिथक ही समझा जाए तो ही सहीं है। मुल्ला की लोकप्रियता का राज भी यही है, कि वह हर इंसान के भीतर बसता है। वह मानवीय मन का ही एक साकार रूप है। क्योंकि उसने गहरी से गहरी बातें हसीं हसीं में बता दी। मुल्ला के लतीफ़ों को समझने के लिए कोई बड़ी दार्शनिक विद्वता नहीं चाहिए। एक ही बात ज़रूरी है- अपने आप पर हंसना आना चाहिए।

अपने खयालों में डूबा मुल्ला नसुरुद्दीन सोच रहा था- 'बुखारा क्यों आया? खाना खरीदने के लिए मुझे आधे तंके का सिक्का भी कहां से मिलेगा? उस कमबख्त टैक्स वसूल करने वाले अफसर ने मेरी सारी रक़म साफ़ कर दी। डाकुओं के बारे में मुझसे बात करना कितनी बड़ी गुस्ताखी थी।' तभी उसे वह टैक्स अफसर दिखाई दे गया, जो उसकी बर्बादी का कारण था। वह घोड़े पर सवार कहवाखाने की ओर आ रहा था। दो सिपाही उसके अरबी घोड़े की लगाम थामे आगे-आगे चल रहे थे। उसके पास कत्थई-भूरे रंग का बहुत ही खूबसूरत घोड़ा था। उसकी गहरे रंग की आंखों में बहुत ही शानदार चमक थी।.....मुल्ला उसे देखकर फिर अपनी भूख मिटाने की सोचता है)

सुबह शहर के फाटक की घटनाओं की याद आते ही वह भयभीत होकर सोचने लगा कि कहीं ये सिपाही उसे पहचान न लें। उसने वहां से जाने का इरादा किया, लेकिन भूख से उसका बुरा हाल था। वह मन-ही-मन कहने लगा, ऐ तकदीर लिखने वाले मुल्ला नसुरुद्दीन की मदद करे। किसी तरह आधा तंका दिलवा दे, ताकि वह अपने पेट की आग बुझा सके। तभी किसी ने उसे पुकारा, 'अरे तुम हां, हां तुम ही जो वहां बैठे हो।' मुल्ला नसरुद्दीन ने पलटकर देखा। सड़क पर एक सजी हुई गाड़ी खड़ी थी। बड़ा-सा साफ़ा बांधे और क़ीमतों खिलअत पहने एक आदमी गाड़ी के पर्दे से बाहर झांक रहा था। इससे पहले कि वह अजनबी कुछ कहता, मुल्ला नसरुद्दीन समझ गया कि खुदा ने उसकी दुआ सुन ली है और हमेशा की तरह उसे मुसीबत में देखकर उस पर करम की नजर की है। अजनबी ने

www.sufiyana.com

खूबसूरत अरबी घोड़े को देखते हुए उसकी तारिफ करते हुए अकड़कर कहा, 'मुझे यह घोड़ा पसंद है। बोल, क्या यह घोड़ा बिकाऊ है?' मुल्ला नसरुद्दीन ने बात बनाते हुए कहा, 'दुनिया में कोई भी ऐसा घोड़ा नहीं, जिसे बेचा न जा सके।' मुल्ला नसरुद्दीन तुरंत भांप गया था कि यह रईस क्या कहना चाहता है।

वह इससे आगे की बात भी समझ चुका था। अब वह खुदा से यही दुआ कर रहा था कि कोई बेवकूफ़ मक्खी टैक्स अफसर की गर्दन या नाक पर कूदकर उसे जगा न दे। सिपाहियों की उसे अधिक चिंता नहीं थी। कहवाख़ाने के अंधेरे हिस्से से आने वाले गहरे अंधेरे से स्पष्ट था कि वे दोनों नशे में धुत पड़े होंगे। अजनबी रईस ने बुजुर्गों जैसे गंभीर लहजे में कहा, 'तुम्हें यह पता होना चाहिए कि इस फटी खिलअत को पहनकर ऐसे शानदार घोड़े पर सवार होना तुम्हें शोभा नहीं देता। यह बात तुम्हारे लिए खतरनाक भी साबित हो सकती है, क्योंकि हर कोई यह सोचेगा कि इस भिखमंगे को इतना शानदार घोड़ा कहां से मिला? यह भी हो सकता है कि तुम्हें जेल में डाल दिया जाए'। मुल्ला नसरुद्दीन ने बड़ी विनम्रता से कहा, 'आप सही फरमा रहे हैं, मेरे आका। सचमुच यह घोड़ा मेरे जैसों के लिए जरूरत से ज्यादा बढ़िया है। इस फटी खिलअत में मैं जिंदगी भर गधे पर ही चढ़ता रहा हूं। मैं शानदार घोड़े पर सवारी करने की हिम्मत ही नहीं कर सकता।' 'यह ठीक है कि तुम ग़रीब हो। लेकिन घमंड ने तुम्हें अंधा नहीं बनाया है। नाचीज़ ग़रीब को विनम्रता ही शोभा देता है, क्योंकि खूबसूरत फूल बादाम के शानदार पेड़ों पर ही अच्छे लगते हैं, मैदान की कटीली झाड़ियों पर नहीं। बताओ, क्या तुम्हें यह थैली चाहिए? इसमें चांदी के पूरे तीन सौ तंके है।', अजनबी रईस ने कहा। मुल्ला नसरुद्दीन चिल्लाया, 'चाहिए। जरूर चाहिए। चांदी के तीन सौ तंके लेने से भला कौन इनकार करेगा? अरे, यह तो ऐसे ही हुआ जैसा किसी को थैली सड़क पर पड़ी मिल गई हो।' अजनबी ने जानकारों की तरह मुस्कारते हुए कहा, 'लगता है तुम्हें सड़क पर कोई दूसरी चीज मिली है। मैं यह रक़म उस चीज से बदलने को तैयार हूं,' जो तुम्हें सड़क पर मिली है। यह लो तीन सौ तंके।' उसने थैली मुल्ला नसरुद्दीन को सौंप दी और अपने नौकर को इशारा किया। उसके चेचक के दागों से भरे चेहरे की मुस्कान और आंखों के काइयां को देखते ही मुल्ला समझ गया कि यह नौकर भी उतना ही बड़ा मक्कार है, जितना बड़ा मक्कार इसका मालिक है।

एक ही सड़क पर तीन-तीन मक्कारों का एक साथ होना ठीक नहीं है, उसने मन-ही-मन निश्चय किया। इनमें से कम-से-कम एक जरूर ही फालतू है। समय आ गया है कि यहां से नौ-दो ग्यारह हो जाऊं। अजनबी की उदारता की तारिफ करते हुए मुल्ला नसरुद्दीन झपटकर अपने गधे पर सवार हो गया और उसने इतने जोर से एड़ लगाई कि आलसी होते हुए भी गधा दुलकी मारने लगा। थोड़ी दूर जाकर मुल्ला ने मुड़कर देखा। नौकर अरबी घोड़े को गाड़ी से बांध रहा था। वह तेजी से आगे बढ़ गया।

जारी है...

बादशाह की कमज़ोरी

एक बार जगमगाती हुई पगड़ी पहन कर नसरूदीन दरबार में दाखिल हुआ। वह जानता था कि राजा उसे पसंद करेगा। और वह पगड़ी को उसे बेचने में सफल हो सकता है। वजीर बोला – "मुल्ला, तुमने इस शानदार पगड़ी की क्या कीमत चुकाई।" मुल्ला बोला– "हजार सोने के सिक्के।"

वजीर, मुल्ला की चाल को समझते हुए राजा के कान में फुसफुसायाः कोई बुद्धू ही इस पगड़ी की इतनी कीमत दे सकता है।

"तुमने इतनी ज्यादा कीमत क्योंकर चुकाई। हजार सोने के सिक्कों की पगड़ी कभी सुनी नहीं।" –बादशाह

"बादशाह सलामत मैंने इसलिए दी क्योंकि मैं जानता था पूरी दुनिया में एक ही बादशाह है, जो इसकी कीमत दे सकता है।" –मुल्ला

राजा ने प्रशंसा से प्रसन्न होकर नसरूदीन को दो हजार सिक्के दे दी।

मुल्ला ने वजीर से कहा– "तुम्हें पगड़ियों की कीमत पता होगी, लेकिन मुझे बादशाहों की कमजोरी पता है।"

www.sufiyana.com

क्वीज़

01. दुआ क्या है?

A दीन का सुतून B आसमान का नूर
C मोमीन का हथियार D तीनों सही

02. 'खुदा से डरो व सच्चों के साथ हो जाओ' किनसे कहा जा रहा है?

A सब लोगों से B इमानवालों से
C फरिश्तों से D शैतान से

03. सूफ़ी किसे कहते हैं?

A जिसकी बुराईयां अच्छाईयों में तब्दील हो जाए।
B जिसका दिल में गैरूल्लाह के लिए जगह न हो।
C जो अपनी सिफत में फानी हो कर रब की सिफत में बाकी रह जाए।
D तीनों सहीं

04. क्या गलत है?

A सिमा, खुदा के छिपे हुए भेदों में एक भेद है और उसके नूर में से एक नूर है।
B रिजालुल्लाह, महफिले सिमा में रक़्स करते हैं।
C नमाज़ इन्सान की मेराज़ है।
D पहले हमारा क़िबला बैतुल मुकद्दस था।

05. गरीबनवाज अलैहि रहमान के पीरो मुर्शिद कौन है?

A ह.निजामुद्दीन अलैहि रहमान B ह.उस्मान हारूनी अलैहि रहमान
C गौस पाक अलैहि रहमान D इनमें से कोई नहीं

06. चारतरकीताज के ज़रूरी नहीं है–

A तर्के दुनिया C तर्के उक़बा
B तर्के लिसान D तर्के बसरा

07. जिहाद किसे कहते है?

A विद्रोह करना
B लोगों को क़त्ल करना
C अपने नफ्स व अना को रब के लिए मिटाना
D दुनिया को त्याग कर जंगलों में रहना

08. तसव्वुफ़ के मायने में से नहीं है–

A त से तौबा C स से सफ़र
B व से विलायत D फ से फना

09. क्या गलत है?

A वो मुसलमान नहीं जो पेट भर खाना खाए और उसका पड़ोसी भूखा रहे।
B हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जिंदगी भर कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया।
C बिना यक़ीन मांगी गई दुआ भी कुबूल होती है
D ज़िक्र खुद के कुछ न होने का और खुदा के सबकुछ होने का एहसास है।

10. नमाज़ की कुबूलियत के लिए क्या ज़रूरी है?

A जिस्म की पाकी C दिल की पाकी
B कपड़े की पाकी D तीनों

:: जवाब SMS के जरिए भेजने के लिए– QUIZ-01, Name, City, Answer (i.e.11E 12F) लिखकर 0888 9501 888 में भेजिए।
:: सारे सवाल इसी पत्रिका से पूछे जाएंगे और सही जवाब अगले अंक में दिए जाएंगे। :: आपका मोबाईल नं. ही आपकी आई.डी. होगी।
:: सारे सही जवाब देने वालों को फ्री पत्रिका दी जाएगी और अगले अंक में नाम दिया जाएगा।

www.sufiyana.com

उर्स, ज़िक्र व महफिले सिमा की तारिखें

JULY

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1 ٢	2 ٣	3 ٤	4 ٥	महफ़िले सिमा कटनी 5 ٦
6 ٧	7 ٨	8 ٩	महफ़िले सिमा रायपुर व शहडोल 9 ١٠	10 ١١	11 ١٢	12 ١٣
13 ١٤	14 ١٥	शबीना शरीफ तिलावते कुरान 15 ١٦	16 ١٧	17 ١٨	18 ١٩	19 ٢٠
20 ٢١	21 ٢٢	22 ٢٣	महफ़िले सिमा जबलपुर व सीवां 23 ٢٤	24 ٢٥	शबे कदर अलविदा जुमा 25 ٢٦	26 ٢٧
27 ٢٨	28 ٢٩	शव्वाल 1435 ईद मुबारक 29 ١	जश्ने चरागां 30 ٢	उर्स इनायती सरकार 31 ٣		

AUGUST

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
31 ٤					1 ٤	2 ٥
महफ़िले सिमा कटनी 3 ٦	4 ٧	5 ٨	6 ٩	महफ़िले सिमा रायपुर व शहडोल 7 ١٠	8 ١١	9 ١٢
रक्षा बंधन 10 ١٣	11 ١٤	12 ١٥	13 ١٦	14 ١٧	महफ़िले सिमा दुर्ग व कटनी स्वतंत्रता दिवस 15 ١٨	16 ١٩
17 ٢٠	18 ٢١	19 ٢٢	20 ٢٣	महफ़िले सिमा जबलपुर व सीवां 21 ٢٤	22 ٢٥	23 ٢٦
24 ٢٧	25 ٢٨	26 ٢٩	27 ٣٠	जी कअदा 1435 28 ١	गणेश चतुर्थी 29 ٢	30 ٣

SEPTEMBER

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1 ٥	महफ़िले सिमा कटनी 2 ٦	3 ٧	4 ٨	5 ٩	महफ़िले सिमा रायपुर व शहडोल 6 ١٠
7 ١١	8 ١٢	9 ١٣	10 ١٤	उर्स बन्दानवाज़ 11 ١٥	महफ़िले सिमा दुर्ग व कटनी 12 ١٦	13 ١٧
14 ١٨	15 ١٩	16 ٢٠	17 ٢١	18 ٢٢	19 ٢٣	महफ़िले सिमा जबलपुर व सीवां 20 ٢٤
21 ٢٥	22 ٢٦	23 ٢٧	24 ٢٨	25 ٢٩	जिल हिज्ज 1435 26 ١	27 ٢
28 ٣	29 ٤	बैंक हालीडे 30 ٥				

नोट

- ☒ हर महफ़िले सिमा के पहले हल्कए ज़िक्र व दरूदो सलाम का एहतेमाम है।
- ☒ हर महफ़िल में लंगर का भी इंतेज़ाम है।
- ☒ दुर्ग खानकाह में हर जुमा को (महफ़िले सिमा छोड़कर) महफ़िले ज़िक्र का भी एहतेमाम है।
- ☒ ज़िक्र व सिमा, एक इबादत है। इसका बहुत अदब रखें। बग़ैर वुज़ू या नापाकी की हालत में हरगिज़ हरगिज़ शामिल न हों।

–इंतेज़ाम कर्दा

ज़्यादा जानकारी के लिए कॉल करें +91 98936 82786

www.sufiyana.com

Sufiyana
the Magazine

ये है इन्सान की

आख़री आरामगाह!

यहां न दौलत है,
न शोहरत है,
न दोस्त अहबाब और
न ही रिश्तेदार।

यहां साथ होंगे - अच्छे बुरे करम।

अच्छे करम लेकर आएंगे
रौशनी, सुकून और आराम।

वहीं बुरे करम लेकर आएंगे
अंधेरा, अज़ाब और तकलीफ।

पहली आरामगाह दुनिया है,
जिसमें मौत का इन्तेज़ार है।

तो दूसरी आरामगाह ये है,
जिसमें फिर से ज़िन्दा होने का इन्तेज़ार है।

इन्तेज़ार, बहुत लंबा इन्तेज़ार,
दुनियावी ज़िन्दगी से कहीं ज़्यादा लंबा।

तकलीफ हुई तो वो भी लंबी होगी,
आराम हुआ तो वो भी लंबा होगा।

अब दो ही आप्शन है,
और कोई एक चुनना है,
अभी चुनना है,

नेकी या बदी?

contact for advertisement
+91 8878 335522 | www.sufiyana.com | www.sufiyana@gmail.com
www.sufiyana.com